अगस्त 2009 ▪ Rs.20/-

चन्दामामा

07

खुशहाल स्वाधीनता दिवस

स्वाधीनता मुफ़्त में नहीं मिलती!

48

शाही खाना

तंदूरी की भारत-यात्रा

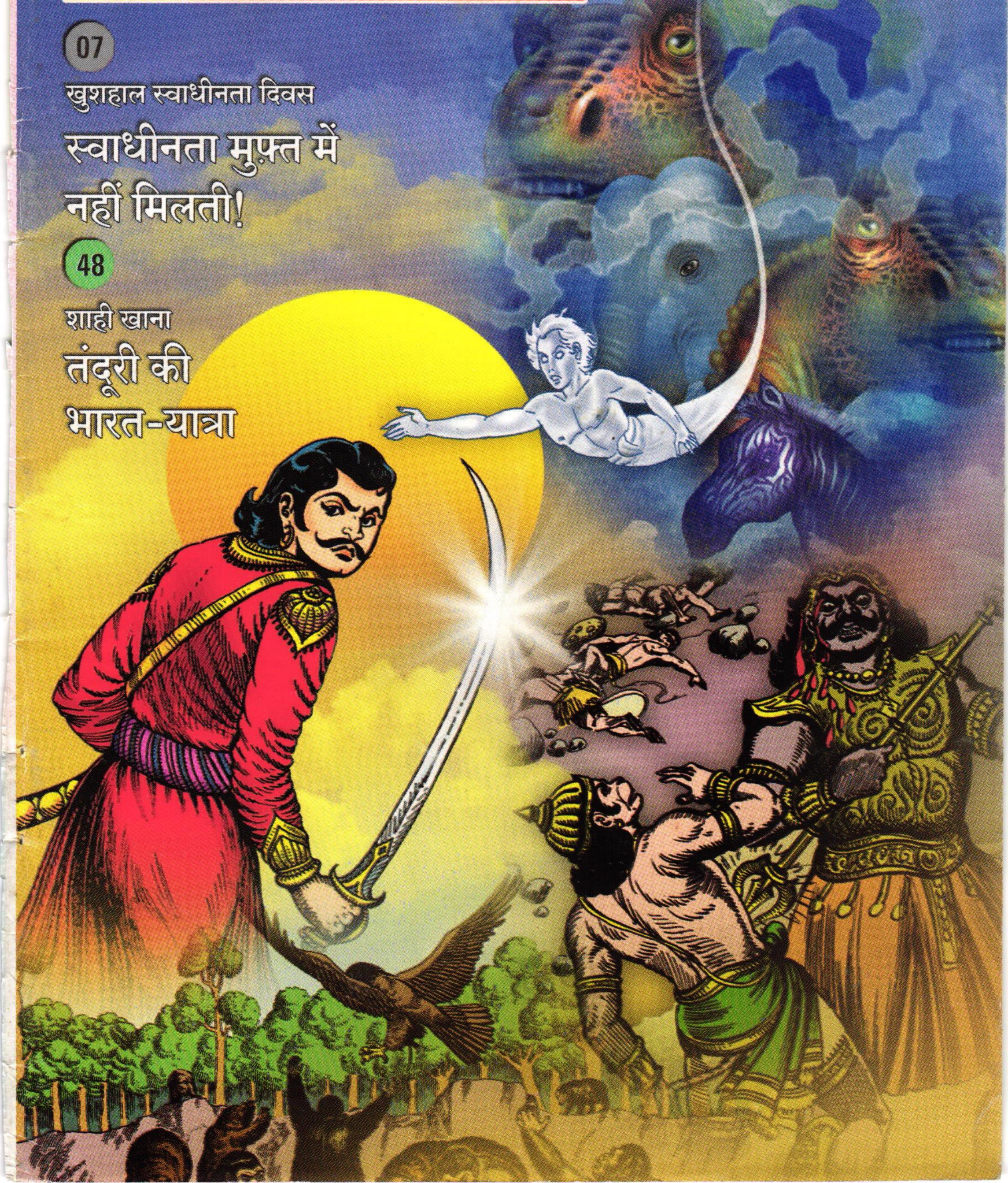

Visit : www.chandamama.com/parle

hindi.chandamama.com

जमदग्नी नाम का पात्र किस कहानी में है?

उत्तर के लिए, hindi.chandamama.com पर
यह कहानी और दूसरी पौराणिक कथाएँ पढ़ें

समय में पीछे जाएँ और चन्दामामा पर
अपनी मनपसंद कहानियाँ पढ़ें।
हमारे संग्रह पर जाएँ और देखें वहाँ
क्या खज़ाना मौजूद है।

अंतरंग

चन्दामामा

सम्पुट-६० अगस्त २००९ सञ्चिका - ८

* पाठकों का पन्ना ...०६
* खुशहाल स्वाधीनता दिवस स्वाधीनता मुफ़्त में नहीं मिलती! ...०७
* आर्य ...१५
* रामायण (युद्ध काण्ड) ...१९
* बिल्ली का चित्र बनानेवाला लड़का (जापान की एक लोक कथा) ...२५
* एक संदिग्ध नाम-१ (जातक कथा) ...२८
* तेज़ फार्मूला ...३०
* यूरेका ...३१
* चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-७ ...३२
* चित्र कैप्शन प्रतियोगिता ...३३
* रूपान्तरण (अनुनिर्वा) ...३४
* भारत दर्शक ...४७
* शाही खाना ...४८
* भारत के धरोहर-स्थल ...५४
* भूल का सुधार! ...५५
* गृहलक्ष्मी ...५९
* खेल दीप-स्तम्भ ...६२
* उदीयमान सितारा ...६४
* खेल-कूद का इतिहास ...६५
* समाचार झलक ...६६
* हँसते-हँसते हो जा लोटपोट ...७०
* चार निर्भीक ...७१

०९ तीरंदाज़ (वेताल कथा)

४१ पाताल दुर्ग (धारावाहिक)

५० आलोक-पुंज (इतिहास के पन्ने)

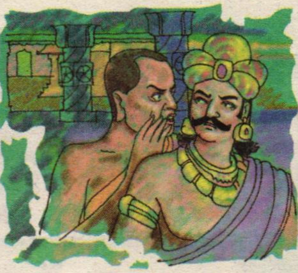

६७ हलवा, कोई खाएगा? (हास्य-कथा)

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

बढ़ते कदम

आज जब हम स्वाधीनता का ६२वाँ वर्ष मना रहे हैं, यह एक सुअवसर है पीछे मुड़ कर देखने का कि पिछले छः दशकों में हमारी क्या उपलब्धियाँ रही हैं। साथ ही यह भी देखना है कि हमने क्या खोया है। वह आत्म निरीक्षण महत्वपूर्ण है क्योंकि इस महान देश के भावी नागरिक के रूप में हमें मौका मिला है कि हम अपने समाज का पुनर्निर्माण कर वह सब पुनः हासिल करें जिसे हम खो चुके हैं तथा वह सब बनाए रखें जो हमारे पास है।

हम इससे शुरू करते हैं कि हम अपने भाग्य के मालिक स्वयं हैं। आज भारत का हर एक नागरिक ये निर्णय ले सकता है कि अपने जीवन की उपलब्धि हेतु क्या करना चाहता है।

दूसरे, हम आर्थिक रूप से विश्व के सर्वाधिक संवर्धनशील देशों में से एक हैं। व्यापक रूप से ऐसा हो सका क्योंकि हमारे पूर्वजों ने अपने प्रयास द्वारा समाज का ताना-बाना बुना जिससे उत्कृष्टता और गुणवत्ता की उत्पत्ति हुई। भौतिक दृष्टि से हमने दिन दूना और, रात चौगुना विकास किया है, यहाँ तक कि हमारे कुछ सह नागरिकों की गिनती विश्व के सर्वाधिक समृद्ध व्यक्तियों में होती है।

हमने प्रजातंत्र को बनाए रखा है और यह ऐसा दावा नहीं है जो विश्व के कई राष्ट्र कर सकें। हम ऐसा एक या दो बार नहीं बल्कि १४ बार से भी ज़्यादा प्रदर्शित कर चुके हैं। इन सब पर हमें गर्व है।

दूसरी तरफ हमारे यहाँ अब भी बड़ी संख्या में ऐसे लोग हैं जो निर्धनता की रेखा से भी नीचे स्तर पर जी रहे हैं। आज भी हमारे देश के कई भागों में जातिवाद और सांप्रदायिकता का प्रचलन है। यद्यपि अपने परिवार की वंश परंपरा और धर्म पर गर्व करना उचित ही है फिर भी अन्य अपेक्षाकृत कम भाग्यशाली लोगों पर शासन करने के लिए इनका प्रयोग करना मानवता के विरुद्ध है। हमारे समाज में अब भी असमानताएँ हैं, अमीर-गरीब शहरी-देहाती और स्त्री पुरुष के बीच उपस्थित असमानता को तत्काल संबोधित करने की आवश्यकता है।

आइए हम संकल्प करें कि देश के भौतिक विकास के लिए संघर्ष करने के साथ-साथ हम इन सामाजिक बुराइयों के प्रति भी संवेदनशील बनें और इनके उन्मूलन का प्रयास करें।

हम अपने सभी पाठकों के लिए खुशहाल स्वाधीनता-दिवस तथा रक्षाबंधन की कामना करते हैं।

संपादक : एल. सुब्रह्मण्यन

अगस्त २००९ Rs.20/-
Founded by B. Nagi Reddi and Chakrapani
Chairman : B. Viswanatha Reddi (Viswam)
Editor & Publisher : L. Subramanyan
Associate Editor : Sowmya Rajendran
Senior Artists: K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist : T. Venkatesan
Asst. Editor-Copy & Pre-Production : R. Sudha
Creative Writer : R. Vaasugi
Layout Designers : M. Nagaraj, B. Thirumal
CIRCULATION TEAM :
Chennai : T N Ravi Shankar, National Sales Manager, Mobile +91 99620 70014
email : ravishankar.tn@chandamama.com
Fazal Khan, Manager-Circulation & Institutional Sales - South, Mobile +91 99625 67860
email : fazal.khan@chandamama.com
Mumbai : Rajendra K Jadhav, Asst. Manager-Circulation, Mobile +91 9320565048
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industry, Opp. State Bank of India, Near Police Station Cross Road, No.6, MIDC Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : rajendra.jadhav@chandamama.com
New Delhi : Sushil Sharma, Circulation Manager-North, Mobile +91 99110 91022
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
Goyal Business Centre, C-23/2 First floor, Connaught Place, New Delhi-110001
Bangalore : P. Murali, Asst. Circulation Manager -Karnataka, Mobile +91 94488 36952
CHANDAMAMA INDIA LTD., 18, 10th Cross, Mayura Street, Papanna Lay Out, Outer Ring Road, RMV 2nd Stage, Bangalore-560094,
Phone +91 80 6655 1000
email:murali.p@chandamama.com
Kolkata : Ananth Prakash, Circulation Manager-East, Mobile +91 98362 82202, 98351 82202
email : ananth.prakash@chandamama.com
Ahmedabad : Kalpesh Raval, Sales Officer-Circulation Mobile +91 98245 19946
email : kalpesh.raval@chandamama.com
Content Head - Online : Sowmya Bharadwaj
email : online@chandamama.com
For Marketing Enquiries :
email : marketing@chandamama.com
Advertisement :
email : sales@chandamama.com
Subscription Queries: L Govindasamy
e-mail : govindaswamy.l@chandamama.com
Customer Cell : A B Sairam
Mobile: +91 9841983774
e-mail : sairam.ab@chandamama.com
Production Executive : Panchakshari R Math
Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,
2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelankarai, Chennai - 600 041 Phone +91 44 43992828, Fax +91 44 43992829
Email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by L. Subramanyan at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, 2/513, Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Thiruvanmiyur, Chennai - 600 041. Editor : L. Subramanyan

पाठकों का पन्ना

मैं *चन्दामामा* का पुराना पाठक हूँ। मुझे हर महीने इसके आने का बेसब्री से इन्तज़ार रहता है, क्योंकि हर एक कहानी में एक सकारात्मक सन्देश छिपा होता है। *चन्दामामा* पत्रिका नहीं बल्कि भारत की अनमोल धरोहर है। आपसे अनुरोध है कि आप इसमें वर्ग पहेली भी छापें तथा और दूसरी प्रतियोगिताएँ आयोजित करें तो सोने पर सुहाग हो जायेगा।

- ई-मेल द्वारा सूरज प्रसाद

पुरस्कृत पत्र

चन्दामामा की बात ही अलग है। 'इट्स डिफरेंट !' जहाँ अन्य बाल-पत्रिकाएँ अपनी मौलिकता छोड़कर भेड़-चाल में शामिल हो गईं, *चन्दामामा* आज भी अपनी मौलिक और स्तरीय रचनाओं के लिए प्रसिद्ध है। इसकी प्रेरक और रोचक कथाएँ हर पाठक का मन मोह लेती हैं। आपने अप्रैल माह में वैदिक-सूत्र नामक स्तम्भ प्रकाशित किया था, जो बड़ा ही रोचक और ज्ञानवर्द्धक था। कृपया और भी वैदिक-सूत्र या अन्य रोचक गणितीय सूत्र प्रकाशित करें जिससे बच्चों में गणित के प्रति रुचि बढ़े और वे सवालों को तीव्रता से हल कर सकें। ईश्वर से यही कामना है कि चन्दामामा सफलता की नई ऊँचाइयों को छुए। ***- प्रभात मिश्रा, पटना***

विक्रम और वेताल की कहानियाँ हमें बहुत कुछ सिखाती है।

- एस.एम.एस. द्वारा : बिढ़ोभ कुश्वाह, यू.पी.

चन्दामामा का निगर *चन्दामामा* ही है। यह हमारी ज़िन्दगी का मुख्य अंश है। ***- एस.एम.एस. द्वारा : सुमित, हरियाणा***

आप अपना विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं अथवा MLANG <space> <Name, Age> <space> <HIN your feedback> लिखकर 54646 को SMS भी कर सकते हैं।

खुशहाल स्वाधीनता दिवस

स्वाधीनता मुफ़्त में नहीं मिलती!

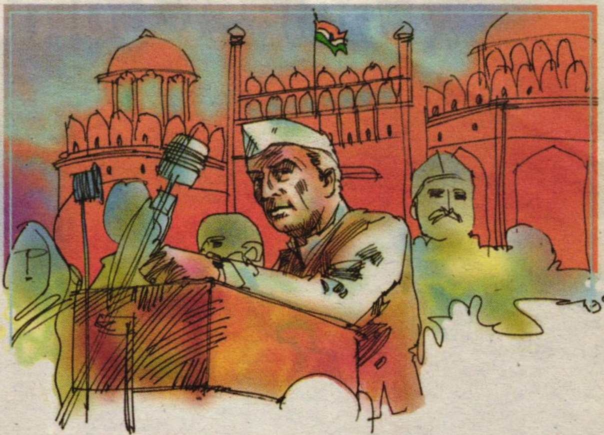

पंद्रह अगस्त को तुम अपने विद्यालय में प्रति वर्ष झण्डारोहण में शामिल होते होगे। तुममें से कइयों ने गर्व का भी अनुभव किया होगा जब तिरंगा निर्भय रूप से लहराते देखा होगा। लेकिन उस वक्त लोगों ने कैसा महसूस किया होगा जब १६ अगस्त १९४७ में पहली बार ऐसा हुआ था, आओ याद करें...

मध्य रात्रि का समय था और हर कोई अपने बिस्तर के बाहर था। प्रत्येक घर और गली में दीपक जगमगा रहे थे। लाल किले पर लोगों का जमघट लगा था जहाँ पं. नेहरू का अपनी ऐतिहासिक 'ट्रायस्ट विद डेस्टिनी' नामक भव्य वार्ता देने के लिए आना निर्धारित था।

तालियों की गड़गड़ाहट से वायुमण्डल गूँज उठा जब राष्ट्रीय ध्वज लहराया और पं.नेहरू ने अपना भाषण आरंभ किया। उनके भाषण के बीच एक जोर की आवाज सुनाई दी। ध्यानमग्न भीड़ ने मुड़ कर देखा कि कौन है जिसने भाषण में बाधा पहुँचाई, वह एक उत्साही किशोर था जो इस महत्वपूर्ण भाषण को शंख ध्वनि के द्वारा यादगार बनाने का प्रयास कर रहा था।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान लोग अपना राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर अंग्रेजों के प्रति विद्रोह प्रदर्शित करते थे। एक बार कुछ कैद स्वतंत्रता सेनानी जेल के अन्दर झण्डा फहराना चाहते थे, यह स्वतंत्रता प्राप्ति से कई वर्ष पहले की बात है। जेल में झण्डा फहराने के लिए कोई खम्भा नहीं था-लेकिन क्या उन्होंने हार मानी? नहीं! चारपाइयाँ एक के ऊपर दूसरी रखी गईं, उनके ऊपर कपड़ों का ढेर लगा, झण्डा ठीक बीच में अटकाया गया! इससे उनका मनोबल बना रहा, उन्होंने दुगुने उत्साह के साथ देशभक्ति के गीत गाये !

जैसा कि वे कहते हैं, स्वाधीनता मुफ़्त में कभी नहीं मिलती। इस वर्ष के झण्डारोहण के समय यह याद रखना। यह केवल खम्भे के ऊपर एक झण्डा फहराना नहीं है, यह एक कठोर संघर्ष को जीतने का प्रतीक है। *चन्दामामा* हर एक के लिए एक खुशहाल स्वाधीनता दिवस की कामना करता है।

नए आर्काइव पसन्द आए? एसएमएस ARCHIVES <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

Avail the Coolest Combo Pack!i

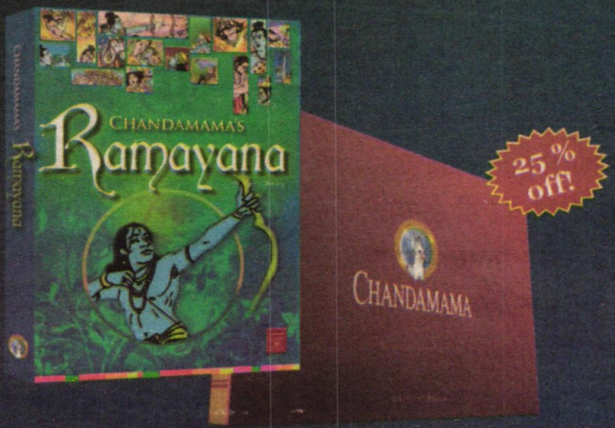

Buy Chandamama's Collector's Edition+Ramayana for Rs ~~898~~ 673* Only!

Chandamama's Ramayana is the first fully Illustrated Ramayana which comes in a single book.

Chandamama Collector's Edition features the best of Chandamama published over the last 60 years.

I want the Coolest Combo Pack:

Name.. Subscriber No ....

Address..

City .... State .... Pin ....

Telephone .... Mobile .... Email ....

Enclosed Cheque/DD for Rupees (in words) ....

Cheque/DD no .... Favouring Chandamama India Ltd

on ....bank. *(Send At-Par cheques or add Rs 60 for non-Chennai cheques)*

Please mail the order form to :

Chandamama India Limited, No. 2/513 (Old 3/396), Sundeep Avenue East, 2nd Main Road, Chinna Neelangarai, Chennai – 600 041. Phone: (044) 43992828

Email: chandamama@chandamama.com Web: www.chandamama.com

Both these titles are available only in English at all leading bookshops.

To place an order go to www.chandamama.com

*For purchase outside India, the Coolest Combo Pack is available at ~~$100~~ $80

वेताल कथा

तीरंदाज़

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा और उसे कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, मैं यह तो नहीं जानता कि किस मित्र की सहायता करने या किस शत्रु से प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से तुम निकल पड़े हो। यह सच है कि मैत्री व शत्रुता शाश्वत नहीं हैं। मित्र शत्रु बनते हैं और शत्रु मित्र और यह सहज है। अधिकार गर्वित शासकों के विषय में तो यह बिलकुल स्वाभाविक है। यह कोई नहीं जानता कि कब, किस विषय में वे कैसे निर्णय लेते हैं। इस विषय को सुस्पष्ट करने के लिए मैं एक ऐसे युवराज की कहानी तुम्हें सुनाऊँगा, जिसने बचपन से ही एक तीरंदाज़ से द्वेष किया और अंत में अपूर्व रीति से उसका सत्कार किया। उस युवराज का नाम था, शिवसेन।'' फिर वेताल उसकी कहानी यों सुनाने लगा:

शिवपुरी राज्य के एक गाँव में शिखमुखी

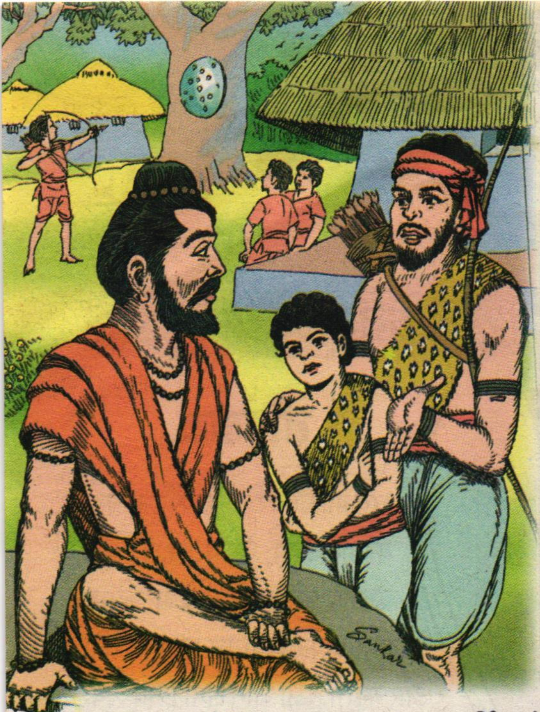

नामक एक तीरंदाज़ रहा करता था। धनुर्विद्या में वह दक्ष था। जब वह शिकार करने जंगल जाता और किसी भी क्रूर जंतु को अपने बाण का निशाना बनाता तो समझ लो वह वहीं का वहीं मर कर जमीन पर गिर जाता।

शिखमुखी का एक बेटा हुआ। उसका नाम रखा, बाण। उसके पाँचवें साल की उम्र से ही वह उसे धनुर्विद्या सिखाने लगा। अपने बेटे को उत्तम वीर बनाने की उसकी तीव्र इच्छा थी।

बाण में भी धनुर्विद्या के प्रति तीव्र आसक्ति थी। जब देखो, तब वह धनुष और बाणों से ही खेला करता था। दसवें साल की उम्र में ही उसने पिता से धनुर्विद्या संबंधी बारीकियाँ सीख लीं। जब एक बार शिखमुखी अपने बेटे को जंतुओं का शिकार करने अपने साथ जंगल ले जाने की तैयारी कर रहा था तब बाण ने अपने पिता से कहा, ''पिताजी, शिकार से भी अधिक अन्य क्षात्र विद्याओं को सीखने की मेरी प्रबल इच्छा है।''

शिखमुखी अपने बेटे की बातों को सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। अच्छा मुहूर्त चुनकर वह उसे धर्मनिरत नामक गुरु के पास ले गया। उसे उनका शिष्य बनाया। धर्मनिरत दंडकारण्य में गुरुकुल चला रहे थे, जहाँ सभी विद्याएँ सिखायी जाती थीं।

उस समय शिवपुरी के राजा शूरसेन का पुत्र शिवसेन भी धर्मनिरत के गुरुकुल में विद्याभ्यास कर रहा था। समवयस्क शिवसेन और बाण में मैत्री स्थापित हुई। शिक्षा के साथ-साथ वहाँ खड्ग युद्ध, गदा युद्ध व अश्वारोहण आदि विद्याएँ भी सिखायी जाती थीं।

यद्यपि इन विद्याओं में शिवसेन बाण से भी अधिक प्रतिभा दिखाता था परंतु धनुर्विद्या में बाण शिवसेन से भी अधिक प्रतिभा प्रदर्शित करता था। यह देखते हुए शिवसेन ईर्ष्या और द्वेष के मारे मन ही मन कुढ़ता था। क्रमशः वह न दिखायी देनेवाली ईर्ष्या अग्नि बनकर उसके मन को जलाने लगी।

गुरु धर्मनिरत भी इसी कोशिश में लगे रहते थे कि शिवसेन को धनुर्विद्या में बाण से भी अधिक प्रतिभावान बनाऊँ, क्योंकि भविष्य में वह राजा बनेगा। उन्होंने भरसक प्रयास किया किन्तु किसी भी प्रकार ऐसा न हुआ। उनकी आशा

नए आर्काइव पसन्द आए? एसएमएस ARCHIVES <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

फलीभूत नहीं हो पायी। बाण ने कभी अपने को शिवसेन से अधिक प्रतिभावान दिखाने का प्रयत्न नहीं किया। उसने सदा मैत्री भाव बनाये रखा।

कभी-कभी वह हृदयपूर्वक शिवसेन का अभिनंदन करते हुए कहता था, "मित्र, खड्ग युद्ध, गदा युद्ध व अश्वरोहण आदि में तुम असमान हो।" यों वह उसकी प्रशंसा करता था। ऐसे मित्र को पाकर वह अपने को धन्य मानता था। परंतु दिन व दिन शिवसेन के मन में उसके विरुद्ध ईर्ष्या, द्वेष बढ़ता जाने लगा।

धर्मनिरत ने एक बार गुरुकुल में होम करने का संकल्प किया। इसके लिए आवश्यक समिधाओं को इकट्ठा करके ले आने के लिए शिवसेन और बाण को जंगल में भेजा। समिधाओं को इकट्ठा करते हुए वे दोनों एक-दूसरे से अलग हो गये।

थके शिवसेन पर अचानक एक सिंह टूट पड़ने ही वाला था कि इतने में उसने यह देख लिया और तुरंत म्यान से तलवार निकाली और सिंह का सामना किया। दुर्भाग्यवश सिंह के पंजे की चोट से तलवार दूर जा गिरी। इस ख़तरे से बचने के लिए वह इधर-उधर भागने लगा।

सिंह गर्जन सुनकर बाण सतर्क हो गया। उसने समझ लिया कि शिवसेन ख़तरे में है। वह वहाँ दौड़ा-दौड़ा आया और शीघ्र गति से आते हुए सिंह को देखकर उसने तरकश से बाण निकालकर उसे निशाना बनाया। निशान अचूक था, सीधे सिंह को बेध गया। बस, सिंह गरजता और छटपटाता हुआ ज़मीन पर गिरकर मर गया।

विक्रम वेताल पर आपके विचार। एसएमएस CVV <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

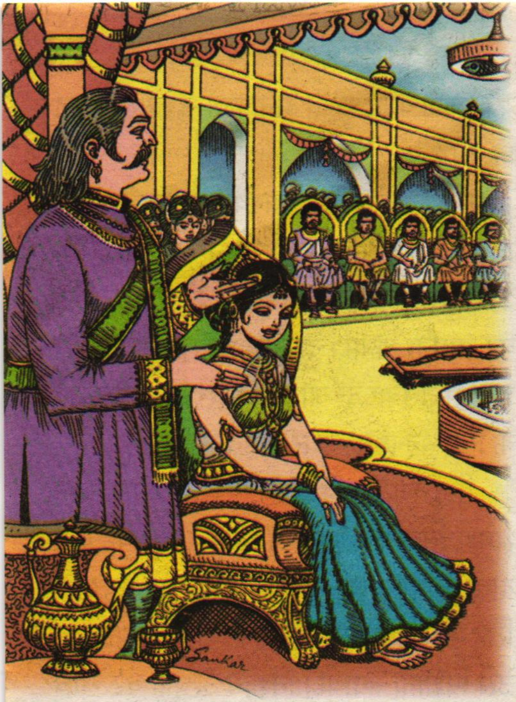

इसके बाद बाण ने अपनी नज़र चारों ओर फैलायी तो देखा कि शिवसेन पेड़ की एक टहनी पर बैठा हुआ है। बाण ने चिल्लाते हुए कहा, "मित्र, डरो मत। सिंह मर गया। तुम निर्भय होकर धीरे से नीचे उतर आओ।"

पेड़ से उतरे शिवसेन ने मरे सिंह को देखा, पर उसने बाण को कृतज्ञता भी नहीं जताई, उलटे मन ही मन वह अपने को नगण्य मानने लगा।

परंतु, बाण ने राजकुमार को बचाने की बात गुरुकुल में किसी से भी नहीं बतायी। वह वहीं भूल गया। यहाँ तक कि गुरु से भी उसने उस घटना का उल्लेख तक नहीं किया। पर, शिवसेन मन ही मन समझने लगा कि यह उसका अपमान है और किसी से भी बताने लायक़ नहीं है।

कुछ समय के बाद दोनों जब युवक हो गये, विद्याभ्यास पूरा करके स्वस्थल चले गये।

एक शुभ मुहूर्त पर शूरसेन ने अपने पुत्र शिवसेन का राज्याभिषेक किया। शिवसेन ने बाल्यमित्र बाण को भी यह समाचार नहीं भेजा। बाण को दूसरों से यह ख़बर मिल तो गयी; पर उसने उसपर ध्यान ही नहीं दिया।

इसके कुछ दिनों के बाद रत्नगिरि के राजा धीरदत्त ने अपनी पुत्री दीप्तिचंदना के स्वयंवर की घोषणा की। उसने यह भी घोषणा की कि इस स्वयंवर में केवल राजकुमार ही नहीं बल्कि धनुर्विद्या में निष्णात कोई भी वीर भाग ले सकता है।

दीप्तिचंदना अद्भुत सौंदर्य-राशि थी। यह जानकर कितने ही राजकुमार स्वयंवर में अपने भाग्य की परीक्षा करने चले आये। साथ ही वे साधारण युवक भी आये, जिन्हें धनुर्विद्या में अच्छा प्रावीण्य था। ऐसे आनेवालों में से बाण भी एक था।

स्वयंवर में आये शूरसेन को देखते ही बाण ने पूछा, "मित्र, सकुशल हो?" बड़े प्यार से उसने कहा। पर शिवसेन उत्तर में 'हाँ' मात्र कहकर चुप रह गया।

राजा धीरदत्त ने सभा मंडप में आये वीरों को संबोधित करते हुए कहा, "सभा मंडप में जो मत्स्य यंत्र है, उसका जो छेदन करेगा, उस वीर से मेरी पुत्री का विवाह संपन्न होगा।"

राजा की घोषणा को सुनने के बाद सामने की क़तार में बैठे बाण को शिवसेन ने ग़ौर से

अपना फ़ीडबैक दें। एसएमएस MLANG <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

देखा। उसे मालूम तो था ही कि बाण धनुर्विद्या में माहिर है, इसलिए उसे डर गने लगा। उसे लगने लगा कि उसकी हार निश्चित है। उसका मन ईर्ष्याग्नि से जल उठा।

उपस्थित कितने ही राजकुमारों ने मत्स्य यंत्र को छेदने की भरसक कोशिश की, पर सबके सब विफल हुए। जैसे ही बाण की बारी आयी, शिवसेन का मन उद्विग्न हो उठा। परंतु आश्चर्य की बात यह हुई कि बाण का निशाना छूट गया। यह देखकर शिवसेन को बड़ा आनंद हुआ।

थोड़ी देर बाद जब शिवसेन की बारी आयी तब वह मत्स्य यंत्र को छेदने में सफल हुआ। सबने हर्ष ध्वनियाँ कीं। दीप्तिचंदना ने बहुत ही आनंदित होते हुए शिवसेन के गले में वरमाला पहनायी।

सभामंडप से बाहर जाते समय जब शिवसेन ने बाण को देखा, तब पास बुलाकर उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, ''मत्स्य यंत्र का छेदन जंगल में खरगोशों का शिकार करने के समान थोड़े ही है।''

उसकी बातों पर बाण केवल मुस्कुराया और बाहर चला गया। रत्नगिरि राजा के कोई पुत्र नहीं था, इसलिए उसने अपनी पुत्री के साथ-साथ अपना राज्य भी शिवसेन के सुपुर्द किया। विवाह के बाद पत्नी समेत शिवसेन अपने राज्य लौटा।

राजधानी पहुँचते ही शिवसेन ने पिता को स्वयंवर की विशेषताएँ सविस्तार बतायीं और साथ ही बाण के बारे में भी बताया। उसके बारे

में सुनते ही राजा ने कहा, ''वह बाण गुरुकुल में तुम्हारा सहपाठी था न? उसकी हँसी उड़ाकर तुमने बहुत बड़ी ग़लती की।''

पंद्रह दिनों के बाद जब विजयदशमी उत्सव संपन्न हुआ, तब शूरसेन ने बाण को निमंत्रण भेजा और उसे यह खिताब देकर उसका सम्मान किया, ''वह वीर जिसका निशाना कभी खाली नहीं जाता।''

आश्चर्य में डूबा शिवसेन हठात् सिंहासन से उठा और भरी सभा में बाण को आलिंगन में लेते हुए कहा, ''मित्र..तुम्हें कोई एतराज न हो तो इसी क्षण तुम्हें रत्नगिरि के प्रतिनिधि पद पर नियुक्त कर रहा हूँ। मेरी इच्छा को ठुकराना नहीं।''

बाण ने मित्र की इच्छा सहर्ष स्वीकार की।

यह कहानी कह चुकने के बाद वेताल ने राजा

hindi.chandamama.com से चन्दामामा की रामायण खरीदें

विक्रमार्क से पूछा, "राजन्, मत्स्य यंत्र का छेदन बाण नहीं कर सका, फिर भी शूरसेन ने बाण को उत्सवों में भाग लेने के लिए निमंत्रित किया और उपाधि प्रदान करके उसका सत्कार किया। पहले से ही जिस शिवसेन ने बाण को नहीं चाहा, जिससे ईर्ष्या की, सबके सामने जिसका अपमान किया, उसे अचानक रत्नगिरि राज्य के प्रतिनिधि के पदकर नियुक्त किया। उसने ऐसा क्यों किया? इसके पीछे क्या कारण हो सकता है? पिता और बेटे के इस आकस्मिक सद्व्यवहार का क्या कारण है? यह जल्दबाजी क्यों? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रहोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।"

विक्रमार्क ने उसके संदेहों के दूर करते हुए कहा, "धनुर्विद्या में बाण सदा शिवसेन से आगे था। उसने जान-बूझकर मत्स्य यंत्र को नहीं छेदा। बाल्य मित्र की जीत के लिए वह जान बूझकर हार गया। मित्र के लिए उसने सुंदरी राजकुमारी व राज्य को ठुकरा दिया। यह उसकी त्याग-बुद्धि व मैत्री का उदाहरण है। शूरसेन ने बाण की इस महानता को पहचाना, इसीलिए उसे राजधानी बुलवाकर उसका सम्मान किया। पिता के डांटने से, न्यायपूर्ण उदात्त चेष्टा से उसके मन में अब तक बाण के प्रति जो ईर्ष्या थी, वह मिट गयी। देरी से ही सही, उसने मित्र की महानता को जान लिया। जिस बाण ने राजोचित विद्याओं का अभ्यास किया और सब प्रकार की योग्यताओं से भरपूर था, उसे राज प्रतिनिधि के पद पर नियुक्त किया।

पिता और बेटे की चर्चाओं में विज्ञता और वितरण के सिवा किसी प्रकार की जल्दबाजी नहीं। यह संपूर्ण रूप से न्यायपूरित निर्णय है। शिवसेन की समझ में अच्छी तरह आ गया था कि बाण जैसा शुभाकांक्षी मित्र ही उसका अच्छा सहायक हो सकता है। इस नियुक्ति से उन्हें दुगनी शक्ति प्राप्त हुई है। किसी भी स्थिति में यह न ही असंबद्ध है न ही जल्दबाजी है।"

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित फिर से ग़ायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा)

(आधार : शिवनागेश्वर की रचना)

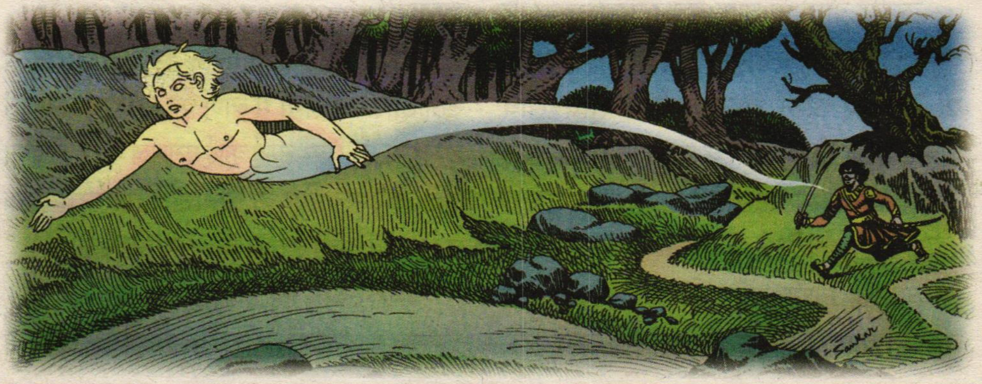

hindi.chandamama.com पर हमारे चन्दामामा हीरोज़ से मिलें

तारविक घोड़े पर सवार सालगाजी जंगल में आर्य पर आक्रमण करने गया। वह आक्रमण करने ही वाला था कि कुछ हुआ...

बहुत हुआ,
तुम्हें क्या चाहिए?
एक मादा
भेड़िया... क्या यह हो
सकती है?
जो मुझे चाहिए,
वह हम दोनों चाहते
हैं तारविक।
तुम्हें मेरा नाम
पता है?
सही करो,
मुझे तुम्हारे सारे
नाम पता हैं।

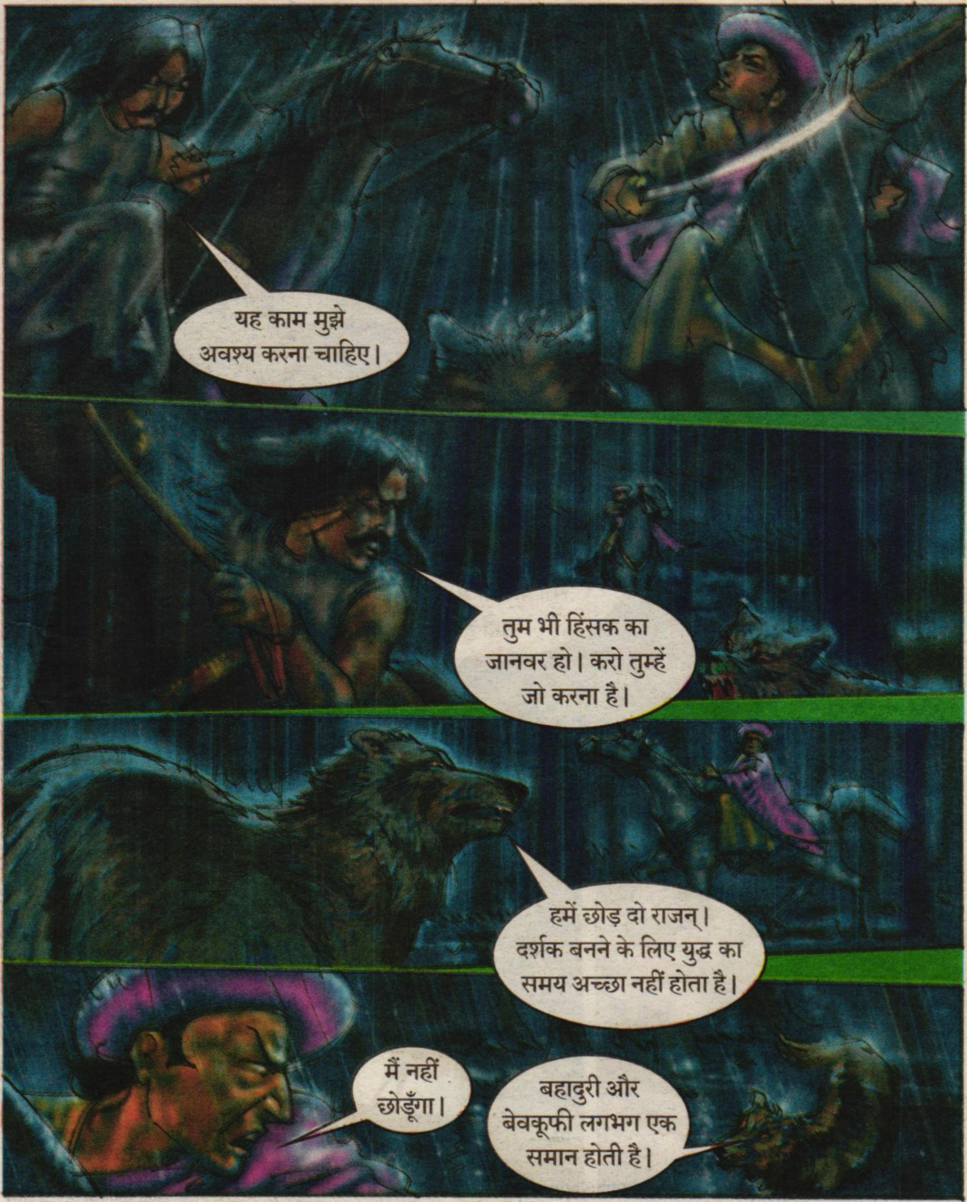
यह काम मुझे अवश्य करना चाहिए।
तुम भी हिंसक का जानवर हो। करो तुम्हें जो करना है।
हमें छोड़ दो राजन्। दर्शक बनने के लिए युद्ध का समय अच्छा नहीं होता है।
मैं नहीं छोड़ूँगा।
बहादुरी और बेवकूफी लगभग एक समान होती है।

यद्यपि आर्य नाराज था फिर भी उसने सावधानी बरतने का निर्णय किया।
कायर!
साबित करो कि तुम वह नहीं हो।
मैं तुम्हारे दाँत देख कर भी भयभीत नहीं हूँ। मैं तुम्हारी दहाड़ सुन कर भी भयभीत नहीं हूँ।
पर मैं तुम्हारी आँखों में स्वयं को देखता हूँ। मैं भयभीत हूँ।
चन्द्रमा देख रहा है, और हम दोनों एक बढ़िया खेल दिखाएँ।
और है...

युद्ध काण्ड - ८

विभीषण ने कुम्भकर्ण के बारे में इस प्रकार और भी बताया।

"कुम्भकर्ण पैदा होते ही, भूख के कारण हज़ारों की संख्या में आदमियों को खाने लगा। लोग डर कर इन्द्र के पास गये। इन्द्र ने गुस्सा होकर कुम्भकर्ण पर वज्रायुध का प्रयोग किया। कुम्भकर्ण ने ऐरावत पर सवार होकर, उसके दाँत निकालकर, इन्द्र की छाती में घुसेड़ दिये।

इन्द्र लोगों को साथ लेकर, ब्रह्मा के पास गया। उसने ब्रह्मा से शिकायत की कि कुम्भकर्ण लोगों को खा रहा है। देवताओं का अपमान कर रहा है। आश्रमों को उजाड़ रहा है और पर-स्त्रियों का अपहरण कर रहा है।

ब्रह्मा ने सब राक्षसों को बुलाकर, उनमें कुम्भकर्ण को देखा। उसने कुम्भकर्ण से कहा, "विश्ववसु ने क्या लोगों को मारने के लिए तुम्हें पैदा किया था? अब से तुम सुध-बुध सब खोकर सोते रहो।"

कुम्भकर्ण को ब्रह्मा के सामने ही नींद आने लगी और वह सोने लगा। यह देख रावण ने कहा, "बाबा...अपने परपोते को यों शाप देना अन्याय है। इसकी निद्रा और जागरण का समय कृपया निश्चित कर दो।"

"यह छः महीने सोकर, एक दिन जागा रहेगा।" ब्रह्मा ने कहा।

विभीषण ने राम को ये बातें बताकर कहा, "राम, तुम्हारे हमले से डरकर अब रावण ने सोते कुम्भकर्ण को उठा दिया है। उसको देखकर ही,

hindi.chandamama.com पर और पौराणिक कथाएँ पढ़ें

जो वानर भागे जा रहे हैं, वे उसके सामने खड़े होकर युद्ध क्या करेंगे? इसलिए हमें वानरों से यह कहना होगा कि वह एक चलनेवाला यन्त्र है।''

राम ने नील से वानर सेना को युद्ध के लिए सन्नद्ध करने के लिए कहा। गवाक्ष, शरभ, हनुमान, अंगद एक एक पहाड़ लेकर लंका के द्वार पर खड़े हो गये।

इस बीच कुम्भकर्ण रावण के घर गया। उसने अपने भाई को, पुष्पक में शोकग्रस्त बैठे पाया।

कुम्भकर्ण को देखते ही, रावण ने स्नेहवश उसका आलिंगन किया।

कुम्भकर्ण ने भाई के चरण छूकर कहा, ''मुझे नींद से उठाने का क्या कारण है?''

''तुम चूँकि बहुत दिनों से सो रहे थे इसलिए तुम न जान सके, कि राम मेरे ऊपर क्या आफत ले आया है? राम, सुग्रीव के साथ समुद्र पार करके आ गया है और हमारी खबर ले रहा है। लंका के बाग और जंगल देखो, सभी जगह वानर हैं। हमारे मुख्य राक्षसों को वानर मार रहे हैं। तुम बड़े बलशाली हो, हमने तुम्हें इसलिए उठाया है, ताकि तुम हमारी मदद कर सको।'' रावण ने कुम्भकर्ण से यों कहा।

कुम्भकर्ण हँसा।

''जब हमने पहिले इस विषय में चर्चा की थी, तो तुम्हारा हित जाननेवालों ने कहा था कि हम पर कोई आपत्ति आनेवाली है। वह आपत्ति अब आ गई है। बिना आगे पीछे देखे, तुम घमंड में सीता को उठा ले आये थे। जो हमारा भाई विभीषण कहे वैसा करो।''

रावण ने यह सुन खीझकर कहा, ''तुम छोटे हो, मैं बड़ा हूँ। मेरा गौरव रखा जाना चाहिए। जो हो गया है, उसके बारे में अब क्यों सोचा जाये? जो करना है, उसके बारे में बताओ, जो मैंने गलती की है, उसको तुम अपनी वीरता से ठीक कर दो। इसी में बुद्धिमत्ता है। वीरता है।''

यह देख कि रावण क्रुद्ध है, कुम्भकर्ण ने धीमे धीमे ढाढ़स बंधाते हुए कहा, ''तुम दुखी न हो, गुस्सा न करो। मैं चूँकि तुम्हारा भाई हूँ और हितैषी हूँ, इसलिए जो कुछ मुझे कहना था, मैंने कह दिया है। युद्ध में राम, लक्ष्मण को मारकर तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा। राम का सिर लाकर, तुम्हारे सामने रखकर, तुम्हें सन्तुष्ट करूँगा। जब तक मैं जीवित हूँ, तब तक तुम्हें राम से क्या भय है? मुझे युद्ध के

वेद चुराकर किसने छुपाए? कहानी के लिए आएँ hindi.chandamama.com

लिए भेजो। मुझे शस्त्रों की कोई ज़रूरत नहीं है। खाली हाथों से ही मैं कितने ही योद्धाओं को मार सकता हूँ।''

कुम्भकर्ण की बातें सुनकर महोदर ने क्रुद्ध होकर कहा, ''तुम गंवार हो, बेअक्ल हो। क्यों रावण ऐसे काम करेगा, जो नहीं किये जाने चाहिए? क्या अच्छे कामों से दुख और बुरे कामों से सुख नहीं मिल रहा है? सीता का अपहरण करने की रावण को इच्छा हुई। उस इच्छा का हमने भी समर्थन किया। खैर, उसे छोड़ो। कह रहे हो कि तुम अकेले ही युद्ध के लिए जाओगे। रणस्थान में जिसने इतने सारे राक्षसों को मार दिया है, उस राम को तुम अकेले कैसे मार सकोगे?'' महोदर ने कहा।

महोदर ने बताया कि वह और द्विजिहु, संहाद्रि, कुम्भकर्ण, वितर्धन पाँचों जाकर, राम को मारेंगे। राम मर गया तो ठीक है, यदि घायल होकर, लहूलुहान होकर वे वापिस गये तो रावण से कहेंगे, ''हमने राम लक्ष्मण को खा लिया है।'' तब रावण, सीता को मनायेगा। धन, सुवर्ण देकर, उसके मन को वश में कर लेगा। बिना, रावण के युद्ध में गये, राम का मुकाबला किये बगैर ही सीता उसके वश में आ जायेगी।

यह सुन कुम्भकर्ण ने कहा, ''इस तरह की बातें कभी न करना।''

उन जैसों की सलाह सुनकर, रावण की यह हालत हुई थी। युद्ध का नाम लेते ही डरनेवाले महोदर जैसे लोग रावण की हाँ में हाँ मिलाते,

उसका पथ प्रदर्शन तो क्या करते, उसकी छाया से बन गये थे।

कुम्भकर्ण की बातें सुनकर रावण ने ज़ोर से हँसकर कहा, ''महोदर, राम से डरता है। इसलिए युद्ध में न जाने के लिए कह रहा है। तुम जाकर युद्ध में विजयी होकर आओ, राम, लक्ष्मण और वानरों को खाकर आओ।''

कुम्भकर्ण ने एक विचित्र भाला लिया। उसे बड़े सारे लोहे से बनाया गया था। उसको सोने से सज़ाया गया था। उस पर लाल फूलों की मालाएँ लगी थीं। वह इन्द्र के वज्र से कुछ कम न था।

उस भाले को लेकर कुम्भकर्ण ने कहा कि वह अकेला ही युद्ध में जायेगा और उसे किसी प्रकार की सेना की ज़रूरत नहीं।

रावण ने उससे सेना तथा हथियार ले जाने

चन्दामामा के सदस्य बनें। एसएमएस CSHOP 54646 पर

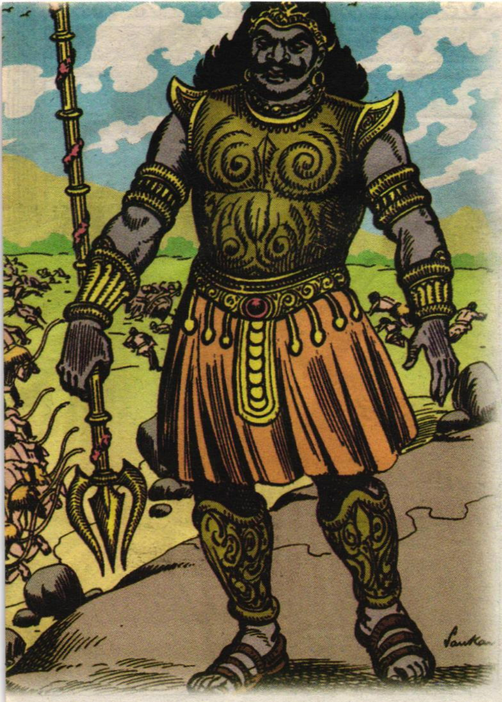

के लिए कहा, क्योंकि युद्ध में अकेले पर खतरा अधिक होता है। उसने अपने भाई के गले में रत्नोंवाला सोने का हार पहिनाया। उसने उसको बाहुबन्द, अंगूठी आदि, आभूषण दिये, अच्छी गन्धवाली फूल मालायें डालीं। कानों में बालियाँ पहनायीं। भारी सोने का कवच दिया। आशीर्वाद दिया।

कुम्भकर्ण ने भाई को आलिंगन किया। उसके चारों ओर प्रदक्षिणा की। साष्टांग नमस्कार करके वह युद्ध के लिए निकल पड़ा।

उसके पीछे बलशाली राक्षस वीर, बड़ी सेना के साथ हथियार लेकर निकल पड़े।

युद्ध के लिए निकलते समय, चूँकि कुम्भकर्ण ने अपना शरीर फुला रखा था इसलिए उसने प्राकार को लाँघकर, वानर सेना पर हमला करना चाहा। उसको देखकर, वानर यूँ तितर-बितर भागे, जैसे आँधी के सामने बादल।

कुम्भकर्ण को देखकर भागनेवालों में वानरवीर, नल, नील, गवाक्ष, कुमुद आदि भी थे। अंगद ने उन्हें देखकर कहा, ''तुम अपने आत्मगौरव, पराक्रम आदि को भूलकर, डरकर, कहाँ भाग रहे हो? वह जो आ रहा है, वह राक्षस नहीं है। भय पैदा करनेवाला खिलौना है। आओ, इस खिलौने का नाश कर दें।''

यह सुन पीछे भागनेवालों में जोश आ गया और वे कुम्भकर्ण पर हमला करने लगे। उन्होंने जो पहाड़, पेड़, पत्थर, उस पर फेंके, उनसे वह बिल्कुल न डरा। उसे और गुस्सा आ गया और वह और ज़ोर शोर से वानरों को मारने लगा।

इस हमले से वानर फिर सिर पर पैर रखकर भागने लगे। कुछ आकाश में उड़ गये। कुछ जाकर समुद्र में गिर पड़े और कई पुल पर से भागने लगे। कुछ भालू पेड़ों पर चढ़ गये। कुछ जाकर पहाड़ों में छुप गये। कुछ चित्त गिर गये। कुछ बेहोश हो गये। कुछ ऐसे लेट गये, जैसे मर मरा गये हों।

''ठहरो...ठहरो...'' अंगद ने वानरों को बुलाया। योद्धाओं को, या तो शत्रु को मारकर कीर्ति पानी चाहिए, नहीं तो शत्रु के हाथ मर कर ब्रह्मलोक पहुँचना चाहिए। पर डरपोकों की तरह यूँ भागना नहीं चाहिए। कुम्भकर्ण जरूर राम के हाथ मरकर रहेगा।'' उसने बन्दरों से कहा।

परन्तु उन्होंने कहा, ''हमें कुम्भकर्ण मारे जा

रामायण की प्रश्नोत्तरी का उत्तर? एसएमएस CRQ <आपका उत्तर> 54646 पर

रहा है। हम जा रहे हैं। यह काफ़ी है यदि हमारे प्राण बच गये।'' कहकर वे कुम्भकर्ण को आता देख, भाग निकले।

परन्तु भागते हुए वानरों को समझा बुझाकर जैसे तैसे अंगद और हनुमान मिलकर उनको वापस ले आये।

फिर हनुमान बारह वानर योद्धाओं को साथ लेकर, युद्ध के लिए निकल पड़ा। उनके साथ वृषभ, शरभ, मैन्द, धूम्र, नील, कुमुद, सुषेण, गवाक्ष, रंभा, तार, द्विविद और पनस थे।

इनके युद्ध करने से कई राक्षस, हाथी, घोड़े और ऊँट मारे गये। कई रथ और वाहन टूट टाट गये। हनुमान ने हवा में उड़कर, कुम्भकर्ण पर पत्थरों और पेड़ों की वर्षा कर दी। कुम्भकर्ण ने उन सबको अपने भाले से दूर फेंक दिया। जब कुम्भकर्ण वानरों को भगाता आ रहा था, तो हनुमान एक पहाड़ लेकर, उसका रास्ता रोककर खड़ा हो गया। जब हनुमान ने उस पहाड़ को लेकर फेंका, तो कुम्भकर्ण का सिर फूट गया और सारा शरीर खून से लथपथ हो गया। जब कुम्भकर्ण ने अपने भाले से मारा, तो हनुमान खून उगलता, बेहोश होकर गिर गया।

हनुमान के गिरते ही, वानर फिर भागने लगे। नील ने उनको रोका और उसने कुम्भकर्ण पर बड़ा पत्थर फेंका। उस पत्थर को कुम्भकर्ण ने मुट्ठी में लेकर चूर चूर कर दिया। पाँचों वानर वीर, कुम्भकर्ण से जा भिड़े, उसे पत्थरों और पेड़ों से मारा, हाथ, पैर से मारा। परन्तु कुम्भकर्ण टस

से मस न हुआ। उसने उन पाँचों को मार दिया।

यह देख, हजारों वानरों ने कुम्भकर्ण पर हमला किया। कुम्भकर्ण उन्हें पकड़कर खाने लगा। वानरों में हाय तोबा मच गई। उन्होंने जाकर, राम की शरण माँगी।

अंगद ने कुम्भकर्ण पर ज़ोर से एक बड़ा पत्थर मारा। कुम्भकर्ण ने जब गुस्से में अपना भाला फेंका, तो अंगद उससे बचकर, कुम्भकर्ण के पास गया। उसकी छाती पर ज़ोर से मारा। उस चोट के कारण कुम्भकर्ण मूर्छित हो गया, फिर वह तुरत होश में आया। उसने अंगद को हथेली में पकड़कर बेहोश कर दिया। भाला लेकर वह सुग्रीव की ओर लपका।

कुम्भकर्ण ने अपना भाला घुमाकर, सुग्रीव पर फेंका, इतने में हनुमान ने आकर उसे पकड़

hindi.chandamama.com से चन्दामामा की रामायण खरीदें

बधाइयाँ ! चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी जून २००९ के उत्तर : C
विजेता : वैभव सिंडाल, जोधपुर

लिया, उसे दोनों हाथों से तोड़कर फेंक दिया। बड़े सारे लोहे से बने भाले को जब हनुमान ने घुटने पर रखकर तोड़ा तो वह एक तिनके की तरह टूट गया।

भाले के चले जाने पर कुम्भकर्ण ने सुग्रीव पर एक पत्थर फेंककर उसे मूर्छित कर दिया। मूर्छित सुग्रीव को कुम्भकर्ण उठाकर ले गया। उसका ख्याल था कि सुग्रीव के उठा ले जाने से वानर सेना तथा राम लक्ष्मण कमज़ोर हो जायेंगे। वह सुग्रीव को लेकर लंका चला गया। हनुमान ने एक क्षण यह सोचा कि कुम्भकर्ण से लड़कर सुग्रीव को छुड़ा लिया जाये, फिर उसने उस समय ऐसा करना व्यर्थ समझा। क्योंकि होश आते ही, सुग्रीव अपने आप ही अपने को छुड़ा सकता था। यह सोचकर भयभीत वानरों को हौसला देता हनुमान वहीं रह गया।

चन्दामामा रामायण प्रश्नोत्तरी

एक वानर नायक ने कुम्भकर्ण द्वारा सुग्रीव पर फेंके गए त्रिशूल को पकड़ कर तोड़ दिया था। वह कौन है?

(a) अंगद, (b) शरभ, (c) हनुमान

आप अपना उत्तर CRQ <a/b/c> <space> <Name, Lang, Place> लिखकर 54646 पर SMS कर दो। बेतरतीब चुने एक भाग्यशाली विजेता को चन्दामामा की 'कॉमिक काम्बो पैक' दिया जाएगा।

लंका के नागरिकों ने जब सुगन्धित जल छिड़का, तो सुग्रीव को होश आ गया। वह सोचने लगा कि अब क्या किया जाये? फिर उसने अपने नाखूनों से कुम्भकर्ण के कान, नाक और कनपटी काट ली। कुम्भकर्ण ने गुस्से में सुग्रीव को ज़मीन पर दे पटका, फिर उसे कुचला। फिर भी सुग्रीव ने इसकी परवाह न की। वह वायुवेग से उड़ता राम के पास आकर मँड़राया।

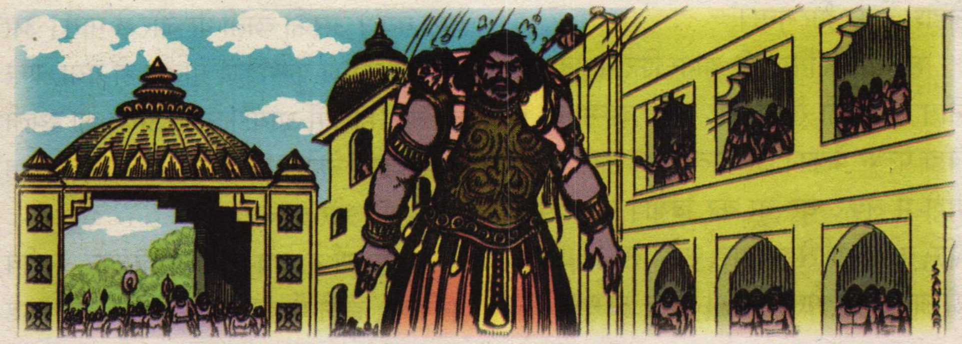

hindi.chandamama.com पर विष्णु के अवतारों के बारे में पढ़े

बिल्ली का चित्र बनानेवाला लड़का

जापान के एक गाँव में एक गरीब किसान और उसकी पत्नी रहते थे। उनके दो बेटियाँ और दो बेटे थे। सबसे बड़ा बेटा और दोनों बेटियाँ अपने पिता की चावल के खेत में तथा माँ की घर में सहायता करते। और सबसे छोटा बेटा जोजी, क्या करता था? जोजी अपने पिता और भाई बहनों के साथ खेत में जाता तो था किन्तु वह उनकी सहायता नहीं करता था। उसे चित्र बनाना अच्छा लगता था, और वह भी और कुछ नहीं, उसे बिल्ली का चित्र बनाना पसन्द था। वह एक लकड़ी उठाता और हर प्रकार की बिल्लियों के चित्र बनाता- दुबली पतली बिल्ली, खूंखार बिल्ली, सोती हुई बिल्ली, विशाल बिल्ली...

जोजी के पिता ने उससे कहा, अगर तुम सारा दिन बिल्ली का चित्र ही बनाते रहोगे तो तुम किसान कैसे बनोगे? जब जोजी के पिता उससे बात कर रहे थे, जोजी उस समय भी एक कागज पर बिल्ली का चित्र बना रहा था। जोजी के पिता ने दुख से सिर हिलाया, इस लड़के के दिमाग में केवल बिल्ली छाई रहती है, और कुछ नहीं, आखिर क्यों?

जोजी के माता-पिता चिंतित होकर उसके भविष्य के बारे में विचार करते, ''जोजी कभी भी एक अच्छा किसान नहीं बनेगा'', उसके पिता ने कहा। ''जोजी बहुत चतुर है। वह गाँव के मंदिर में पुजारी का शिक्षार्थी बन सकता है। पुजारी बहुत बूढ़े हैं और एक सहायक पाकर खुश ही होंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि जोजी बहुत शीघ्र सीख लेगा!'' उसकी माँ ने कहा।

अतः जोजी के माता-पिता उसे गाँव के पुजारी से मिलाने ले गए। पुजारी ने देखा कि जोजी चतुर है और उसमें अच्छी कल्पना शक्ति है। ''मैं उसे खुशी से सिखाऊँगा, लेकिन मैं चाहता हूँ कि, मैं जो कहूँ जोजी उसे माने और करे।'' पुजारी ने जोजी के माता-पिता से कहा। जोजी राजी हो गया। वह पुजारी के पास रहने लगा।

राजा विक्रम अच्छे हैं या वेताल? एसएमएस MLANG <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

उसके पास अपनी लेखन सामग्री थी- एक ब्रश, एक पत्थर और स्याही-कलम। उसे स्याही बनाना बहुत पसन्द था। वह पत्थर के गढ़े में थोड़ा पानी डालकर, ब्रश से अच्छी तरह घिसता और लो! स्याही तैयार। यह बड़ा ही रोचक था, ब्रश को स्याही में डुबा कर... पेपर पर लिखता किन्तु आप शायद अंदाजा लगा सकते हैं कि उसे लिखने से ज़्यादा क्या पसन्द होगा। जी हाँ, उसे पेपर पर बिल्ली का चित्र बनाना ही पसन्द था!

पुजारी को यह उचित न लगा, ''जोजी, अगर तुम अपना सारा वक्त बिल्ली का चित्र बनाने में ही लगा दोगे तो तुम पुजारी बनने की शिक्षा कब लोगे?'' उन्होंने उससे पूछा। वह भी उतना बुरा न था, जोजी ने तो मंदिर के मुड़े परदों-पेपर पट्टियों आदि पर बिल्लियाँ बनाना शुरू कर दिया। जोजी यहाँ-वहाँ सब जगह बिल्लियाँ बनाता। पुजारी ने जोजी को एक तरफ़ ले जाकर कहा, ''जोजी, तुम्हें बिल्लियों के सिवाय और कुछ नहीं सूझता और उससे तुम्हें पुजारी बनने में कोई सहायता नहीं मिलने वाली, मुझे डर है कि तुम्हें अपने घर वापस जाना पड़ेगा।'' जोजी ने दुख के साथ हामी भरी और अपना सामान बैग में रखा। उसने पुजारी से विदा ली और चल दिया।

जोजी जानता था कि यदि उसके माता-पिता को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है, तो वे बहुत निराश होंगे। वह पास के ही एक और मंदिर के बारे में जानता था और इसलिए उसने सोचा कि, देखूँ, शायद मैं वहाँ के पुजारी का शिष्य हो सकूँ। किन्तु जोजी को पता नहीं था कि वह मंदिर निर्जन है क्यों कि एक विशाल पैशाचिक चूहे ने मंदिर के अंदर तूफान मचा रखा था। बहुत से सैनिकों ने मंदिर से उसे निकालने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे।

जोजी जब मंदिर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। उसने फाटक खोला, मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ीं और दरवाजा खटखटाया, किन्तु किसी ने दरवाजा नहीं खोला। ''आश्चर्य! यहाँ कोई दिखता क्यों नहीं?'' जोजी विस्मित था। उसने भारी दरवाजा धकेला और वह चर्रऽऽ की आवाज के साथ खुल गया। वहाँ अंधेरा था और अंदर जाले थे।

जोजी ने एक लैंप खोज कर जलाया। मंदिर शांत और निर्जन था, तभी जोजी ने कुछ देखा और उसने खुशी से ताली बजाई। बड़े कमरे में चारों तरफ दीवार पर पेपर की पट्टियाँ टंगी थीं। वह तो शर्म की बात होगी यदि उन्हें यूंही खाली

hindi.chandamama.com पर एक हरियाणवी कहानी पढ़ें

छोड़ दिया जाए। उसने तुरंत अपनी स्याही और ब्रश निकाला और बिल्ली का चित्र आंकना शुरू किया। वह तब तक बनाता रहा जब तक केवल एक पेपर की पट्टी बची रही। और उस पर उसने एक भीमकाय बिल्ली बनाई। वह उसकी बनाई हुई सर्वोत्तम दुबली-पतली, सबसे बड़ी बिल्ली थी, जोजी के मन में आत्मतोष का भाव उभरा। उसे लगा उसके हाथ में दर्द होने लगा है, आँखें भी भारी हो रही हैं। उसने देखा विशाल कमरा बेतरतीब सा है अतः वह छोटे कमरे में गया और बेंच पर आराम से सो गया।

देर रात को जोजी डर से जाग उठा, उसने जोर की आवाज सुनी। कोई विशाल जानवर हॉल में उधम मचा रहा था। अब उसकी समझ में आया कि मंदिर में कोई क्यों नहीं था, उसे लगा काश! वह भी वहाँ नहीं आया होता। अब उसने एक दूसरी आवाज सुनी, बूऽऽऽ! शश्..., और किसी दूसरे संघर्ष की आवाज आई। थोड़ी देर के बाद उसने धम्म सुना और फिर नरम पंजों की चाप.. फिर शांति । जोजी को हॉल में जाने का साहस नहीं हुआ।

सुबह जब दिन की रोशनी कमरे में आई तो जोजी में कुछ साहस आया। वह हॉल में घुसा। क्या दृश्य था? एक विशाल चूहा जमीन पर मरा पड़ा था। कमरे में और कुछ न था सिवाय बिल्ली के चित्रों वाले परदों के। उसने भीमकाय बिल्ली की तरफ देखा। वह अचरज में पड़ गया, 'क्या मैंने बिल्ली का सिर दाहिनी तरफ और पूँछ बाईं तरफ को नहीं बनाई थी? और बिल्ली के मुँह पर कुछ लाल सा लगा था?' जोजी सोच में डूब गया, तभी उसकी आँखें बड़ी हो कर फैल गईं जब उसने सच्चाई का अनुभव किया। उसने झुक कर बिल्ली का अभिवादन किया, "ओह बिल्ली रानी! तुमने ही इस पैशाचिक चूहे से मेरी रक्षा की। जब तक भी मैं जीवित रहूँगा मैं बिल्ली के अतिरिक्त कुछ नहीं बनाऊँगा।" जोजी ने घोषणा की।

जब गाँव वालों को यह खबर मिली, जोजी उनका हीरो बन गया। मंदिर का पुजारी जोजी को अपने सहायक के रूप में लेना चाहता था, किन्तु नहीं! वह एक महान कलाकार बना और मुझे आपको बताने की आवश्यकता नहीं कि वह अपनी पूरी जिंदगी में क्या बनाता रहा। क्यों, जरूरत है क्या?

- पुनकर्थित- रामा रमेश

कोई पोलिश कहानी पढ़ना है? hindi.chandamama.com देखें

जातक कथा
चन्दामामा द्वारा पुनर्कथित
एक संदिग्ध नाम-१
संत परमानन्द हिमालय की तराई के एक आश्रम में रहते थे।
एक दिन...
कितना आश्चर्यजनक! यह कमल अकेला है जो पूरी तरह खिला है!
उसकी जिज्ञासा ने प्रोत्साहित किया, संत कमल की तरफ तैरे।
एक बच्चे का रोना सुनकर संत आश्चर्य में पड़ गए।
Waah Waah!
?
यहाँ तो कहीं कोई नहीं है फिर भी...

आश्चर्य से बढ़कर आश्चर्य! कमल के अन्दर एक बच्ची!
संत ने तय किया कि वे उस बच्ची का पालन करेंगे। उन्होंने बच्ची का नाम रखा 'आशंका।'
वर्ष बीते। संत को नन्ही आशंका से बहुत प्यार था।
आशंका बड़ी होकर आकर्षक युवती हुई। एक दिन...
आह! कितनी सुन्दर लड़की!
सभासद महल की ओर भागा।
ओह राजन्! मैंने जिसे देखा, आपको इस दिव्य कुमारी से अवश्य मिलना चाहिए।
सच? उसका नाम क्या है?
और है...

तेज फार्मूला

इस माह का सवालः

राम के बगीचे में ६८ आम के पेड़ हैं, जिनमें से ६ पेड़ों के सारे आम गिलहरियों ने खा लिए। १३ पेड़ों में कोई फल नहीं है। बाकी हर पेड़ में ४९ आम हैं। हर दस आम तोड़ने पर राम को अपने मित्र श्याम को १ आम देना होगा जिसने पेड़ों की देखभाल में राम की सहायता की है। राम को खुद के लिए कितने आम मिलेंगे? बिना किसी यंत्र की सहायता लिए इस गणना का सबसे तेज तरीका क्या होगा?

नोटः इस सवाल का हल अक्तूबर २००९ के अंक में प्रकाशित होगा।

सबसे तेज फार्मूला बतानेवाले को ५००/- रुपये का इनाम मिलेगा। यदि एक से अधिक सही प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं तो प्रत्येक सफल प्रतिभागियों को रुपये १००/-प्राप्त होंगे। अपने प्रवेश फार्म ३१ अगस्त २००९ से पहले इस पते पर भेजें:

संपादक, चन्दामामा इण्डिया लिमिटेड, ***२/५१३, संदीप अवेन्यू पूर्व, सेकण्ड मेन रोड, चिन्ना नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१*** **या ई-मेल करें:** contests@chandamama.com

---

हमें जून महीने के सवाल के सारी प्रविष्टियाँ तीव्रतम तरीका को अपनाये बिना प्राप्त है। इसलिए किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। यहाँ प्रस्तुत है इसको हल करने का तीव्रतम तरीका :

स्टेप १: बिल्डिंग में भरे हुए फ्लैटों की संख्या = ९
बच्चों की संख्या = ११
(७ फ्लैटों में से हर एक में १ बच्चा है। स्नेहा और रमेश दोनों में से हर एक के फ्लैट में दो दो बच्चे हैं। इसलिए ७+२+२=११)

स्टेप २: प्रति बच्चे का कुल खर्च = ७०+२५+३=९८.

स्टेप ३: नाटक का कुल खर्च = ११x९८
जब भी दो अंकों वाली संख्या को ११ से गुणा किया जाना हो तो इस वैदिक गणित फार्मूले को अपनाएँ। इकाई के अंक को अपने उत्तर के दाहिने तरफ रखें और दहाई अंक को बाँई तरफ। दोनों संख्याओं के बीच कुछ अन्तर रखें, ताकि गिना जा सके-११x९८, ९ ८ लिखें।

२. अब दोनों अंकों को जोड़ें। सवाल में एक अंकीय संख्या है तो उसे दोनों अंकों के बीच लिखें और वही आपका उत्तर होगा। उदाहरण के लिए यदि आपको ११ से ३४ को गुणा करना है तो ३+४=७ होगा जो एक अंकीय संख्या है। इस रूप में आपका उत्तर हो ३७४ होगा लेकिन यहाँ सवाल में दो अंकीय संख्या है- ९+८=१७ अतः परिणाम इस प्रकार लिखें ९१७८ (१ हाथ में रहा)

३. हाथ के १ को पहले अंक में जोड़ें १+९=१० आपका उत्तर होगा १०७८. इसे आजमाएँ! यह सारी दो अंकीय संख्याओं में काम आएगा।

प्रतियोगिता मई २००९ के विजेता हैं : अनिरुद्ध नरुला, चंडीगढ़।

पहनने लायक फ़ोन? hindi.chandamama.com पर और जानें

आप अपना थर्मामीटर स्वयं बनाएँ!

आवश्यक सामग्री:

प्लास्टिक या काँच की एक पारदर्शी बोतल, प्लास्टिक ढक्कन के साथ; एक पारदर्शी नली; पानी; खाने वाला रंग; मार्कर पेन; प्लास्टि सिन यशा मोडलिंग क्ले ।

विधि:

- बोतल में तीन चौथाई पानी भर दें। उसमें कुछ बूँदे खाने वाले रंग की डालें।
- बोतल के प्लास्टिक ढक्कन में एक छेद बना लें जिसमें से नली जा सके।
- बोतल का ढक्कन अच्छी तरह बन्द कर दें। ढक्कन के छेद में नली डालें। ध्यान रहे, नली बोतल के तल को न छुए।
- मोडलिंग क्ले से नली के आस पास की जगह पूरी तरह बन्द कर दें। यह बहुत महत्वपूर्ण है।
- नली में हल्के से फूँके ताकि उसमें पानी का स्तर ऊपर उठे। पानी का स्तर गिर जाने का अर्थ है कि ढक्कन का छेद ठीक से सील नहीं है। इसे प्रयोग करके देखें।
- पानी के स्तर पर मार्करपेन से निशान लगाएँ। यह निशान तुम्हारे कमरे का तापक्रम दर्शाता है।
- अब अपना थर्मामीटर सूरज की गर्मी में, गर्म पानी की ट्रे में, या फ्रिज में रखो। पानी का स्तर देख कर उस पर निशान लगाओ। चढ़ते और उतरते तापक्रम को जाँचने का यह एक आसान तरीका है।

मूल विचारधारा:

थर्मामीटर बदलते तापक्रम में तरल पदार्थों के विस्तार और संकुचन के सिद्धांत पर काम करता है। मानक धर्मामीटर में पानी की जगह अल्कोहल का प्रयोग किया जाता है।

स्टेम सेल्स में विशेष क्या है? hindi.chandamama.com पर जाएँ

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-७

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

***Co-sponsored by* Infosys FOUNDATION, Bangalore**

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

***यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टि एक से अधिक हों तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।**

तुम्हें क्या करना चाहियेः

१. एक कागज पर उत्तरों को लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-७** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर ३१ अगस्त तक हमें मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर अक्तूबर २००९ के अंक में प्रकाशित होंगे।

हो जा दीवाना!

१. बिल्लियों से संबंधित एक अंधविश्वास यूरोप में फैले काले प्लेग का कारण बना। वह अंधविश्वास क्या था?

२. कौन सा महाद्वीप है जिसमें दुनिया के सबसे जहरीले दसों साँप हैं?

३. दुनिया में कौन सी जगह है जहाँ चिकेन को काँटे चम्मच से खाना ग़ैर कानूनी है?

४. एलेक्टोरोबिया क्या है?

५. दुनिया में कौन सा एक मात्र महाद्वीप है जहाँ कोई सरीसृप नहीं है?

६. दुनिया के किस भाग में शुक्ति (ऑइस्टर) पेड़ पर चढ़ सकती है?

७. टाइटैनिक के डूबते समय दो कुत्ते थे जिन्हें बचाया जा सका। वे किस नस्ल के थे?

Courtesy:http//freedigitalphotos.net

चन्दामामा क्रिकेट क्रिस्टल बॉल मई २००९ के उत्तर:

१. डेकेन चार्जर्स और रॉयल चैलेन्जर्स के बीच; २. एडम गिलक्रिस्ट; ३. कोई नहीं; ४. कोई नहीं; ५. मैथ्यु हेडन; ६. आर.पी. सिंह; ७. एम मोर्टाज़ा।

आई पी एल स्वप्न XI टीम :

१. मैथ्यु हेडन; २. एडम गिलक्रिस्ट; ३. सुरेश रैना; ४. तिलकरत्न दिलशान; ५. युवराज सिंह; ६. रोहित शर्मा; ७. युसुफ पठान; ८. अनिल कुम्बले; ९. आशीष नेहरा; १०. आर.पी. सिंह; ११. लसित मलिंगा.

विजेता : निरंजन भट्ट, सिरसी

नोट : १३ भाषाओं में से कई प्रविष्टियाँ हमें प्राप्त है, लेकिन सिर्फ एक ही ने ५०% से अधिक सही उत्तर दिया है इसीलिए सिर्फ एक ही को लेपटॉप पुरस्कार दिया जा रहा है।

छींकने पर दिमाग की कोशिकाएँ मरती हैं। और छोटी-छोटी बातें hindi.chandamama.com पर

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

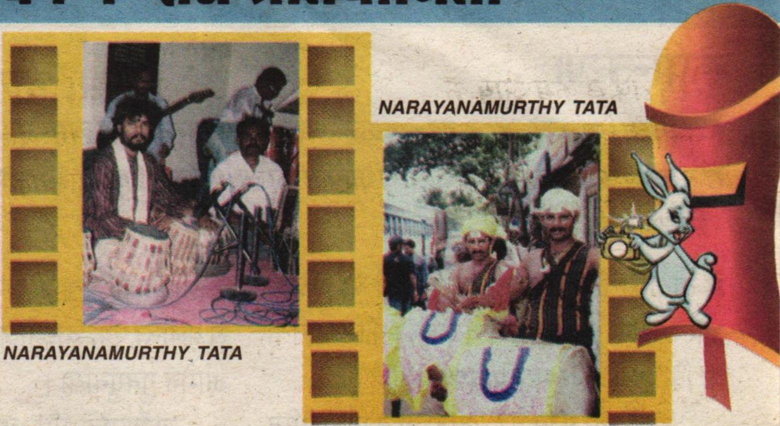

NARAYANAMURTHY TATA

NARAYANAMURTHY TATA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा, २/५१३, संदीप अवेन्यू पूर्व,
सेकन्ड मेईन रोड़, चिन्न नीलांगरै, चेन्नई - ६०० ०४१.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

तिलक राज गुप्ता
मकान नं. २४४९/१३,
मुकुंद लाल नेशनल कालेज के साथ,
यमुनानगर, रादौर - १३५ १३३
हरियाणा

विजयी प्रविष्टि

मम्मी मुन्ने को पढ़ाने में व्यस्त,
हम तो अपने खाने में मस्त।

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-५ जून २००९ उत्तर:

१. १८८६, जर्मनी; २. प्रीमियर पद्मिनी; ३. हिन्दुस्तान-१०, हिन्दुस्तान मोटर्स द्वारा निर्मित; ४. मारुति-सुजुकी; ५. बुगाती रॉयल कैल्नर कूप, जो १९८७ में ४.८७ मिलियन पाउण्ड में बिकी; ६. अल्टीमेट एरो, शेल्बी सुपरकार्स द्वारा निर्मित २५७ मील प्रति घण्टा; ७. हैन्स हॉलस्ट्रुप और लैरी पर्किन्स पहले सौर कार रेसर्स थे जिन्होंने पर्थ से सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) तक १९८३ में सौर ट्रेक पूरा किया; ८. सानन्द प्लाण्ट, टाटा मोटर्स, गुजरात।

नोटः कोई भी पूर्णतः सही प्रविष्टि नहीं मिली अतः किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

दुनिया के त्योहारों के बारे में जानने के लिए hindi.chandamama.com

रूपान्तरण

("अच्छा-अच्छा, बहुत हुई - चटर-चटर, अब हमें चलना चाहिए।" ओमेन तेज़ आवाज़ में गरजा। और एक झटके के साथ जहाज का चलना शुरू हुआ, धीरे-धीरे अनुनिर्वा की ओर - "विलुप्तों की भूमि।")

मैं दादाजी और लड्डू के पास खड़ा था। लेमन और ओमेन अच्छे दोस्त थे लेकिन कौन जानता था कि जहाज पर मेरा भविष्य क्या है?

"यहाँ और कौन है?" दादाजी ने मानों प्रेरित होकर पूछा।

"हूँऽऽऽ... दो डाइनोसॉर जो कि हर हाल में अपना वर्तमान देखना चाहते हैं हालांकि हमने उन्हें आगाह किया है कि वे चुपचाप रहें और

एक दूसरे को न खाएँ, इसके अलावा समुद्री मतली से क्लान्त एक चाइनीज़ हाथी और एक क्वागा," ओमेन गुनगुनाया।

"कॉकरोच भी" लेमन ने लंबी साँस ली।

"हाँ, मैं उसके बारे में बताना भूल गया। यह एक लज्जाजनक है, जिस तरीके से उसने यहाँ रुकने का आग्रह किया जबकि कॉकरोचों की गिनती धरती पर कभी समाप्त नहीं होगी", ओमेन गुर्राया।

"क्वागा क्या है?" मैंने पूछा। यह सुनने में एक फल के नाम जैसा लगा (ग्वावा, क्वागा, मैंने मन में सोचा,) और मैं जानने को उत्सुक था कि यह किस प्रकार का मजेदार जानवर होगा।

"एक क्वागा तकरीबन एक ज़ेबरा है," ओमेन धीरे से हँसा, उसकी आँखें चमक रही थीं।

"बस करो", लेमन ने तेजी से कहा।

"बेचारी क्वागा यह कहलाना पसंद नहीं करती। वह दक्षिण अफ्रीका से है और बहुत से इंसान यही सोचते हैं कि वह एक जेब्रा है। तुम जो भी करो पर उसे यह मत बताओ कि वह वैसी लगती है।"

"क्या वह रो पड़ेगी?"

साइट पर फ़ीडबैक के लिए एसएमएस FEEDBACK <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

"नहीं, यद्यपि चाइनीज़ हाथी ऐसा बहुत करता है। वह सोचना पसंद करता है कि वह संवेदनशील और भावनात्मक और कवि हृदय और..." ओमेन नाटकीयता से मुस्कुराया।

"वह बहुत ही नीरस है," लेमन ने बात काटते हुए कहा।

"जहाज पर तुम केवल इतने ही क्यों हो?" दादाजी ने पूछा, "मैं किसी हद तक लंबे दाँतों वाले बाघ (सेबर टूथ्ड टाइगर) की उम्मीद कर रहा था!"

"क्योंकि हम कम से कम एक अरब की भीड़ की आशा कर रहे थे! सभी इन्सान अनुनिर्वा में नहीं आ सकते क्योंकि हम वर्तमान जनसंख्या का छठा भाग ही लेते परंतु आपकी जाति का छठा भाग ही एक भारी भीड़ है!" ओमेन ने एक साँस में समझाया।

"वे सभी तैयार हैं और मानवों के अनुनिर्वा में आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं," लेमन ने शांतिपूर्वक कहा।

"ओह, क्या हमारा भव्य स्वागत होगा? क्या तुम सोचते हो कि मुझे तैयार हो जाना चाहिए।" दादाजी ने उत्साहित होते हुए पूछा।

लेमन और ओमेन ने एक दूसरे की तरफ देखा। लेमन ने अपने सर को ज़रा सा झटका दिया और ओमेन ने कहा, "एर्मSSS... वास्तव में .... हाँ क्यों नहीं? हाँ यह ठीक रहेगा कि आप तैयार हो जाएँ और वैसे अब आप जश्न मनाइए। उत्सव की भावना और ये सब? ऐसा भी हो सकता है हम चाइनीज़ हाथी से एक गाथा गीत (बैले) और कुछ गाने के लिए कहें, हुह? क्यों न हम इसके लिए जहाज के ऊपर चलें? अच्छी योजना, अच्छी योजना, अच्छी योजना........" और तभी बिना किसी पूर्वसूचना के ओमेन ने रोना शुरू कर दिया।

लेमन ने अपने सिर पर हाथ मारा और कहा, "स्वयं को मूर्ख बनाने के लिए तुम सब विश्वास करो! इस सब के लिए क्षमा करना। हम तुम्हें बता दें, इस समय अनुनिर्वा में उपस्थित जनसमूह में तुम्हारी जाति के लिए कोई दया भाव नहीं है।"

"मतलब?" मैंने पूछा।

"मतलब, तुम्हारे पास दुबारा से विलुप्त होने का एक अच्छा मौका है! वे इस बात पर लड़ रहे हैं कि कौन अधिकाधिक संख्या में इन्सानों को घायल करेगा।" ओमेन ने धीरे से कहा।

"रंग में भंग!" दादाजी फुसफुसाए। उस दिन पहली बार मुझे उनके चेहरे पर चिंता की

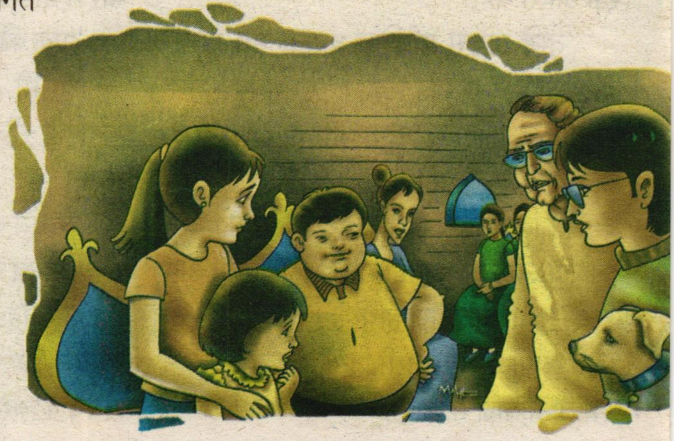

hindi.chandamama.com पर हमारे चन्दामामा हीरोज़ से मिलें

रेखाएँ दिखाई दीं। मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे सिर में दर्द की एक बहुत, लयबद्ध लहर उठ रही है। जैसे कोई मेरी खोपड़ी के भीतर मुझे विदीर्ण करने वाली वॉइलिन बजा रहा है। इससे मेरा दर्द काफी बढ़ता जा रहा था।

बिलकुल तभी, एक मानव समूह हमारे पास आया। उनमें एक बड़ी सपनीली आँखोंवाला मोटा लड़का, दो मुड़ी हुई छोटी चोटियों वाली लड़कियाँ जिनमें एक अच्छी न लगने वाली गंध थी और जांघिया पहने हुए घोड़े की तरह दिखने वाली एक औरत थी।

''तुम्हें अपना परिचित बनाना मेरी खुश-किस्मती है,'' लड़का झुका। ''दुर्भाग्यवश तुम्हें ज़िन्दगी के काँटों में गिरना और खून बहाना है, फिर भी मैं प्रसन्न हूँ।''

मैंने विनम्रता के इस बड़े से पिटारे को घूरा, तब तक लेमन ने अपना गला साफ किया और बोली, ''यह चाइनीज़ हाथी है।''

''कागा,'' घोड़े जैसी दिखने वाली औरत ने संभ्रांत आवाज़ में कहा।

''डाइनोसॉर,'' लड़कियों में से एक ने अपनी तथा अपनी बहन की तरफ इशारा करते हुए कहा।

''क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि डाइनोसॉर में से गंध आती है?'' लेमन विजयोल्लास से मेरे कानों में फुसफुसाई। मैंने सर हिलाया।

हम अभी भी वर्तमान के समुद्र पर थे और अनुनिर्वा एक्सप्रेस आर्क (जहाज) अदृश्य था, लेकिन सभी गैर-मानवों ने वर्तमान क्षेत्र में प्रविष्ट होने के समय से ही मनुष्य का छद्म (नकली) वेश धारण करने की एहतियात बरती। मैं मंद भाव से चौंका कि वास्तव में इनमें से अधिकतर प्राणी अपने वास्तविक रूप में अपने पैर का पंजा हमारे ऊपर रख सकते थे और मसलकर मार सकते हैं।

''हमसे मत डरो। डोडो हमें तुम्हारे बारे में बता चुका है और हम तुमको हानि नहीं पहुँचाएँगे,'' ग्वावा ने कहा, जैसे कि उसने मेरा दिमाग पढ़ लिया हो।

''धन्यवाद,'' मैं बुदबुदाया।

''हाँ और हमने पहले से ही एक से तुम्हारे बारे में बात कर ली है,'' लेमन ने कहा।

''एक कौन है?'' दादाजी ने पूछा।

''मयूरी, मयूरी, म्यूटेंट (उत्परिवर्ती जीव-जैनेटिक क्रीचर)'' ग्वावा ने धीमी आवाज़ में कहा।

''मयूरी का जन्म मानव से हुआ, लेकिन वह स्वयं मानव नहीं थी।

जब वह अपनी माँ के गर्भ में थी उसने एक पर्यावरणीय तबाही के दौरान विषैली गैसों का सेवन (श्वसन) कर लिया था,'' ओमेन ने

नए आर्काइव पसन्द आए? एसएमएस ARCHIVES <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

समझाया। "मयूरी चार हाथों के साथ पैदा हुई थी और वह नीले रंग की है। अनुनिर्वा में उसकी तरह का कोई नहीं है।"

"लेकिन अगर वह इन्सान है तो क्या वह हमारी सहायता नहीं करेगी?" मैं आशान्वित होते हुए बोला।

"वह न तो मानव है और न ही गैर- मानव," ग्वावा ने धैर्यपूर्वक कहा। "उसकी जाति ने उसे नहीं अपनाया क्योंकि वह त्रुटिपूर्ण पैदा हुई थी, यद्यपि स्वयं मयूरी इन्सानी दुष्टता की पैदाइश है... लोग जिन्होंने वायु को विषाक्त गैसों से भर दिया!"

"हाँ, वह अनुनिर्वा में है क्योंकि उसकी तरह की म्यूटेंट दुबारा कभी जन्म नहीं लेगी, एकदम समान रूप में तो नहीं। उसे मानव रूप में ही होना था, लेकिन इससे पहले कि उसकी जाति विलुप्त होती, वह विलुप्त हो गई। मयूरी हम जैसे प्राणियों का दर्द समझती है जो पृथ्वी छोड़ने को मजबूर किए गए। वही एक है जो निर्णय लेती है। और हम आज्ञापालन करते हैं," डाइनोसॉर बहनों में से एक ने कहा।

"तो अन्य अनुनिर्वावासियों से बचाने की तुमने कैसी योजना बनाई है?" दादाजी ने शांतिपूर्वक पूछा। अब उनके चेहरे पर मुस्कुराहट का लेश मात्र भी नहीं था।

"अभी तक कोई योजना नहीं," लेमन बोली। वह अब भी ओमेन पर बिना किसी पूर्वसूचना के हमें परेशान करने के लिए नाराज़ थी।

"ठीक, तब अच्छा हो हम एक बनाएँ!" दादाजी ने अनमनेपन से कहा। "कैसा रहेगा अगर हम सब अनुनिर्वा में प्रवेश के समय से ही मानव रूप में ही रहें?" ग्वावा ने पूछा।

"आमतौर पर हम वर्तमान से निकलते ही असली रूप में आ जाते है परन्तु अगर हमें ऐसे ही रहना है तो हो सकता है कि हमला करने से पहले हमारे साथी यह निश्चय करने में कुछ समय लगाएँ कि असली इन्सान कौन हैं!"

"यह कुछ बुद्धिसंगत सुझाव लगता है," दादाजी ने कहा और हम सब सहमत हो गए।

मैंने एक कॉकरोच को जहाज पर मस्ती से रेंगते हुए हुए देखा। ओमेन ने अपनी नाक ऊपर सिकोड़ी और कहा, "हे रॉबिन, क्या तुम देख नहीं सकते हम यहाँ वार्तालाप करने की कोशिश कर रहे हैं?"

"मैंने सोचा कि तुम किसी को भी नाम देने में विश्वास नहीं रखते?" मैंने पूछा।

"हमने यह उसे अपमानित करने के लिए

hindi.chandamama.com पर यक्ष पर्वत की कहानियाँ पढ़ें

किया, लड़के। हम उसे रॉबिन द रोच बुलाते हैं,'' लेमन ने कहा।

यद्यपि रॉबिन परवाह करता हुआ नहीं दिखाई दिया। वह सीधा हमारी तरफ आया और एक चौंकाने वाली तीखी आवाज़ में बोला, ''हैलो, हैलो, हैलो ! क्या ये लोग तुम्हें डरा रहे हैं? क्या तुम्हें विलुप्त जानवरों और उनकी दुखद कहानियों के बारे में उबाऊ बकवास सुना रहे हैं?''

''अरऽऽऽ... वास्तव में, हम बिना किसी हमले का सामना किए अनुनिर्वा में प्रवेश की योजना बनाने का प्रयास कर रहे हैं,'' मैंने स्वयमेव कहा। इससे पहले मैंने कभी एक तिलचट्टे से बात नहीं की और यह बेतुका लगा कि मैं यह बात एक पूर्णतया विवेकपूर्ण तरीके से

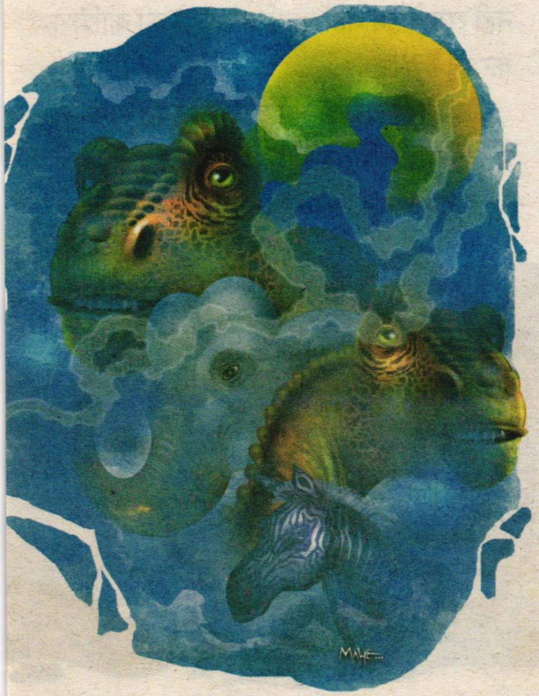

कर रहा था। लेमन मेरे कान में बुदबुदाया कि रॉबिन आर्क में गलती से आ गया और उसने उतरने से इंकार कर दिया बावजूद इसके कि उससे लगातार दोहराया गया कि उसकी प्रजाति अभी विलुप्त होने वाली नहीं है।

''यह एक आसान तरीका है। जमीन के नीचे का रास्ता प्रयोग में लाओ,'' अपने स्पर्शकों को प्रसन्नता से हिलाते हुए रॉबिन बोला।

''तुम्हें पता है क्या ....इस में कुछ हो सकता है,'' ग्वावा ने कहा। ''हम जहाज को तोड़ सकते हैं और जमीन के नीचे पहुँचने के लिए समुद्री जीवों की मदद ले सकते हैं। पर वे किसी हाल में थलचरों के राजनीतिक विचारों से सहमत नहीं होंगे ! हम उन्हें वहीं रख सकते हैं जब तक रात नहीं हो जाती। अँधेरे में भागना सुरक्षित होगा !''

''जहाज तोड़ना? क्या तुम्हें इसकी अनुमति है?'' दादाजी ने पूछा। ''निश्चय ही, हमें केवल इसे वायुरहित करना है और यह नीचे तल तक डूब जाता है। इस प्रकार हम विलुप्त जलचरों को एकत्रित करते हैं,'' डाइनोसॉर बहनों में से एक ने धैर्यपूर्वक समझाया।

''हम पानी के नीचे साँस कैसे लेंगे?''

''ओह इसका हमारे पास सब इंतजाम है, चिंता मत करो लड़के,'' लेमन ने आश्वासन देते हुए कहा।

''क्या तब हम अपने आप को सामान्य रूप में बदल सकते हैं ? मुझे कभी - कभी रूप परिवर्तन करने की उत्सुकता होती है, लेकिन मैं अपनी सूँड़ की बहुत कमी महसूस करने लगा

hindi.chandamama.com पर बीरबल की कहानियों का आनन्द लें

हूँ," चाइनीज़ हाथी ने कहा। वह एकाध बार इस वार्तालाप में थोड़ा उत्सुक दिखा दिया। बाकी अधिकांशतया, वह शून्य भाव से समुद्र को ताकता रहा।

"तुम सब का भला हो मुझे योजना के लिए धन्यवाद न देने का," रॉबिन बोला।

"ओह, मुझे बहुत खेद है," दादाजी क्षमा माँगते हुए बोले। "बहुत धन्यवाद तुम्हारा!"

रॉबिन वास्तव में चौंका हुआ दिखाई दिया, "क्या तुम एक भले बूढ़े आदमी नहीं होना चाहते, तब? तुम मुझे किसलिए धन्यवाद दे रहे हो?"

दादाजी उलझे हुए दिखाई दिए जब कॉकरोच निराशा पर खुशी को बिखेरे हुए धीरे-धीरे बोला और चिल्लाया, "समुद्री लुटेरो! अब हम आते हैं!"

लेमन, ओमेन, ग्वावा, दोनों डाइनोसॉर और चाइनीज़ हाथी ने मिलकर अपना एक वृत (गोला) बनाया। उन्होंने अपनी आँखें मूँदीं और एक अजीब भाषा में बुदबुदाना शुरू किया। यह एक अजीबोगरीब संगीत था।

इसमें पेड़ों का फुसफुसाना था
और मधुमक्खियों की गुनगुनाहट
झरनों का गीत और
सपनों के दिल का दर्द;
हिरन की छलाँग
और मात्र एक चुटकी
लौह-गंध डर की।

जब यह मंत्रजाप रुका, मैंने जाना कि मैंने अपनी आँखें बंद कर ली थीं। मैं अपनी पलकों की नारंगी लहरों से बड़े छाया चित्र देख सकता

था। मैं अपनी आँखें खोलना नहीं चाहता था। मैं डर गया था कि पता नहीं मैं क्या देखूँगा।

"शिवा," दादाजी की धीमी फुसफुसाहट ने मुझे निश्चेष्टता से जगाया। धीरे से, मैंने अपनी आँखें खोलीं।

वहाँ भीषण गुलाबी आकाश में डाइनोसॉर बहनों के राक्षस जैसे सर उठे हुए थे। उनके हरे शल्क (स्केल) शीशे की तरह चमक रहे थे। चाइनीज़ हाथी मुझे घूर रहा था, उसके विशाल कान हवा में कोमलता से फड़फड़ा रहे थे। ग्वावा धीरे से हिनहिनाई। वह जेबरा जैसी दिखाई दी, लेकिन मैं उसे यह कहने की हिमाकत नहीं कर सका। लेमन ने अपनी चोंच से मेरी कमीज़ खींची और धीमे से कहा, "अनुनिर्वा में स्वागत है!"

"हम तकरीबन वहीं हैं," ओमेन ने घोषणा की। ऐसा कहते हुए उसने डोडो जैसा दिखते हुए भी कुरेदनी की शक्ल बनाने की कोशिश की।

(और है) - सौम्या राजेन्द्रन

बालक भीम जैसी और कॉमिक्स चाहिए? एसएमएस COMIC <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 20% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

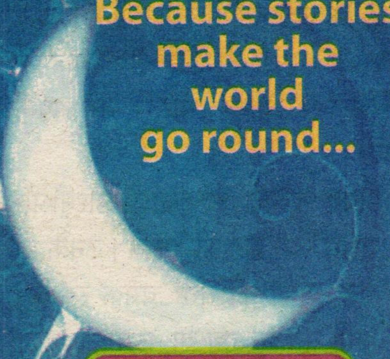

Choose

your Chandamama!
Go to www.chandamama.com or SMS CSHOP to 54646 & we'll get in touch with you!
Subscribe Now!!

Chandamama is available in English and 12 regional languages. Junior Chandamama for children below 9 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior

Name: ....

Date of Birth: .... Sex :..............................

Address: ....

....

....

.... City: ....

State:.. Pin:..................................

Telephone:...

Mobile:..

Email:...

Subscription Number 9for renewals):...................................

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees..

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on..

....bank.

*Add Rs.60 for non-Chennai cheques. Your subscription will commence in 4 weeks.

Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
New 2/513 (Old 3/396) Sundeep Avenue East,
2nd Main Road, Chinna Neelankarai,
Chennai - 600041. Phone: (044) 43992828, Fax: (044) 43992829
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at: www.chandamama.com

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 240	Rs. 375
REGIONAL (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 770	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 190	Rs. 300
JUNIOR (Rs. 15/- per copy)	Rs. 180	Rs. 325	Rs. 460	Rs. 575	Rs. 675
You Save		Rs. 35	Rs. 80	Rs. 145	Rs. 225

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

पाताल दुर्ग - १३

(बौने राक्षस ने नौका को नदी के बहाव की ओर चलाया। भील उस पर पत्थर फेंक रहे थे। नौका नदी के एक पत्थर से टकराई और टुकड़े-टुकड़े हो गई। बौना राक्षस एक स्त्री के साथ तट पर आ गया। धूमक और साथी जब किनारे पर पहुँच रहे थे, तो एक उजड़े शिवालय से एक बड़ा वनमानस उनकी ओर आने लगा। बाद में-)

धूमक सब से आगे था। उसने अपनी ओर आते हुए वनमानस और उसके पीछे पेड़ों पर बैठे और पशुओं को देखा। वह जान गया कि वनमानस और अन्य सब उसी की ओर देख रहे हैं।

''विरूप... क्या आश्चर्यजनक नहीं है कि मनुष्य से क्रूर से क्रूर जन्तु भी डरकर भाग जाता है? परन्तु इनका व्यवहार कुछ भिन्न-सा मालूम होता है। शायद इन जन्तुओं ने अभी तक मनुष्यों को नहीं देखा है।'' धूमक ने कहा।

विरूप, धूमक की बातें नहीं सुन रहा था। वह अपने कन्धे पर बैठे गरुड़ पक्षी को संभाल रहा था और फिर एक-एक कदम आगे रखता, वह चिल्लानेवाले वनमानस की ओर देखने लगा। धनुष पर बाण लगाकर धूमक आज्ञा के लिए प्रतीक्षा करने लगा।

पुलिन्द यह सब कुछ नहीं देख रहा था। उसकी दृष्टि नीचे नदी के किनारे पर लगे बौने राक्षस और नीचे ज़मीन पर पड़ी स्त्री पर थी। उसका मन बेहद अशांत था। वह सोच रहा था कि किस प्रकार वह वहाँ पहुँचे और इसके पहले कि बौना राक्षस उसकी पत्नी को लेकर भागे, वह उसे पा ले।

hindi.chandamama.com पर पौराणिक कथाएँ पढ़ें

तमेड़ चलानेवाले चारों भील डर से काँप रहे थे। वे अपने सरदार के इशारे पर नदी के तमेड़ों पर कूदने के लिए तैयार थे।

धूमक ने निश्चल खड़े होकर, भाले से वनमानस की ओर निशाना लगाया। सोमक को बाण न छोड़ने के लिए संकेत करते हुए उसने कहा, ''यह वनमानस पेड़ पर बैठे जन्तुओं का सरदार जान पड़ता है। अगर हमने इसे मार दिया, तो वे सब हम पर हमला करेंगे। इसे डराकर भगा देना अच्छा होगा।'' सोमक ने उसकी बात से सहमति जताई। वह भी इतने जीव-जन्तुओं को एक साथ देख कर आशंकित था।

इतने में पुलिन्द जोर से चिल्लाता तमेड़ों की ओर भागा। ''वह बौना राक्षस मेरी पत्नी को लेकर जंगल में भागा जा रहा है। हमारा यहाँ क्या काम है? पहले इस दुष्ट को पकड़ो। मुझे अपनी पत्नी को उसके चुंगल से छुड़ाना है।''

भीलों के सरदार पुलिन्द की बात धूमक को ठीक ही लगी। यदि उसने बौने राक्षस को पकड़ लिया, तो उससे महाकली के बारे में बहुत से भेद जाने जा सकते हैं।

सोमक और धूमक ने अपने ऊपर राजकुमारी कान्तिसेना को छुड़ाने की जिम्मेवारी ले रखी थी। वे तभी अपने प्रयत्न में सफल होते जब कि वे जवान पत्नी पाने के लिए पुलिन्द की मदद करते और विरूप की कालशम्बर की कुशलता के बारे में जानने में सहायता करते। अतः दोनों ने आपस में सलाह मशवरा किया और कहा, ''पुलिन्द, ठहरो, हम आ रहे हैं। क्यों इन जंगली जानवरों से आफ़त मोल लेते हो? तमेड़ों में चलो वहीं चलें, जहाँ वह राक्षस उतरा है। राक्षस इस बीच जंगल में कहीं नहीं गया होगा।'' धूमक ने कहा।

तब सब तमेड़ों की ओर भागे। धूमक और सोमक वनमानस को बिना पीठ दिखाये, होशियारी से चलने लगे। परन्तु उनको इस तरह तमेड़ों की ओर भागता देख, वनमानस छाती आगे करके चिल्लाता, उछल-कूद करने लगा और शाखाओं पर बैठे जन्तु नीचे उतरकर, धूमक की ओर भागने लगे।

यह खतरनाक परिस्थिति है। अगर वे पीठ दिखाकर भागते, तो इससे पहले कि वे तमेड़ों के पास पहुँचते, वनमानस और भालू उन पर आ

hindi.chandamama.com पर देवी भागवत की कथाएँ पढ़ें

कूदते। अगर वे डटकर उनका मुकाबला करते, तो कितनों से लड़ते?

धूमक यह सोचता, मुड़कर सोमक से कुछ कहना ही चाहता था कि सोमक का पैर फिसला और वह लड़खड़ाया।

यह देख वनमानस ने उस पर लपकना चाहा। परन्तु विरूप इतने में जोर से चिल्लाया, "आहा, शाम्भवी! काल गुरु...तुम अपना बल दिखाओ। यही उसके लिए अच्छा मौका है।" कहते हुए अपने कन्धे के गरुड़पक्षी को वनमानस की ओर छोड़ा।

गरुड़ अपने पंख फड़फड़ाता बिजली की तरह वनमानस के सिर पर चोंच से मारने लगा। चोट से वनमानस लड़खड़ाया? वह सम्भलकर गरुड़-पक्षी की ओर हाथ पसार रहा था कि गरुड़ ने उसके गले पर जोर से मारा। उस चोट के कारण वनमानस गिर पड़ा और जल्दी-जल्दी लुढ़कने लगा। उसने किसी प्रकार स्वयं को संभाला और उठ खड़ा हुआ। वनमानस बार बार संभलने का प्रयास करता किन्तु गरुड़ बड़ी ही फुर्ती के साथ उस पर फिर आक्रमण कर देता। अंतः वनमानस की शक्ति जवाब देने लगी और अब वह जो गिरा तो उठ न सका, लुढ़कता चला गया।

अपने सरदार को यूँ धूल चाटता देख, बाकी जन्तु जहाँ-जहाँ थे, वहाँ-वहाँ रुक गये। यही मौका देख, धूमक और उसके साथी, भागकर अपनी तमेड़ों के पास पहुँचे, सब से बाद में तमेड़ पर सवार होनेवाला विरूप था। सीटियाँ बजाता चुटकियाँ बजाता, वह गरुड़ को पकड़ने का

किताबें खरीदें। एसएमएस CSHOP 54646 पर

प्रयत्न कर रहा था। परन्तु गरुड़ उड़ा और उजड़े मन्दिर की चोटी पर, कुछ देर बैठा। फिर ची ची करता वनमानस के चारों ओर जमा हुए जन्तुओं पर तेज़ी से मँड़राने लगा।

"विरूप, यह पक्षी अब तुम्हारे हाथ से निकल गया है। उसकी बात भूल जाओ। जो हमारी वह मदद कर सकता था, उसने कर दी है। अब हमें किनारे पर पहुँचकर उस बौने राक्षस को पकड़ना होगा।" धूमक ने कहा।

विरूप अभी गरुड़ पक्षी की ओर ही देख रहा था। जो रस्सी उसने उसके पैरों से बाँधी थी, वह अभी नीचे ही लटक रही थी। "वह मेरा पालतू पक्षी है। वह मुझे छोड़कर कहीं न जायेगा। देखते रहो।" "आओ बेटा...आओ, गरुड़ बेटा, इधर आओ।" विरूप तालियाँ पीटकर चिल्लाने लगा।

दोनों तमेड़ें आगे बढ़ीं। पुलिन्द औरों से जल्दी चप्पू चलाने के लिए कह रहा था। वह बड़ा घबरा रहा था कि उसके आने से पहिले, बौना राक्षस उसकी जवान पत्नी को लेकर कहीं जंगल में न भाग जाये।

परन्तु बौना राक्षस भागने की कोशिश नहीं कर रहा था। वह पास बैठी स्त्री के कन्धे पर हाथ रखकर मुस्करा रहा था। मगर क्या कह रहा था, यह किसी की समझ में नहीं आ रहा था।

यही नहीं, अपनी ओर आते तमेड़ों को वह दिखा रहा था और पुलिन्द को अंगुली से दिखाकर, वह उससे कुछ पूछ भी रहा था।

स्त्री कुछ कहकर हँसी। बौने राक्षस ने भी कुछ कहा, वह हँसता-हँसता किनारे किनारे भागा और चिल्लाया, "क्या तुम मुझे पकड़ने आ रहे हो? या मेरी पत्नी को?" इन लोगों की समझ में कुछ नहीं आया। वे सोच में पड़ गए, आखिर बौने राक्षस का मतलब क्या है। उस स्त्री की हँसी भी विचित्र ली लगी, मानों उसे पुलिन्द से कुछ लेना-देना ही न हो। तभी...

सब लोगों की नज़र पुलिन्द की ओर गई। उन्होंने सोचा कि पुलिन्द पानी में कूदकर, तैरकर, पार जाकर राक्षस से जा भिड़ेगा। परन्तु पुलिन्द बिना हिले डुले बैठा था। वह तो किनारे पर बैठी स्त्री को घूर रहा था।

काफी देर बाद "वह मेरी जवान दसवीं पत्नी नहीं है। मेरी पत्नी, जब नाव डूबी थी या तो तभी

भारतीय पौराणिक कथाओं के लिए hindi.chandamama.com पर आएँ

डूब गई थी, नहीं तो उस राक्षस ने कोई जादू करके उसका रूप ही बदल दिया है। मेरा प्रयत्न सारा व्यर्थ रहा।'' पुलिन्द ने कहा। वह बड़ा निराश हो गया।

जब तमेड़ राक्षस के पास पहुँची, तो सब से पहिले धूमक किनारे पर कूदा।

राक्षस उस स्त्री के साथ बीस फुट पीछे जा खड़ा हुआ। उसने कहा, ''मेरा तुमसे कोई झगड़ा नहीं है। यह स्त्री तुममें से किसी की पत्नी नहीं है। क्या इसी के लिए तुम इतनी दूर से मेरा पीछा कर रहे हो। अब तुम अपने रास्ते जाओ और मैं अपने रास्ते।''

यह सुनकर, धूमक ने हँसकर कहा, ''हम लोगों में यह कहा जाता है कि ठिगना बड़ा चालाक होता है। राक्षसों में भी ठिगने को चालाक समझा जाता होगा। तुम भी बड़े चालाक होगे। हमारी तुम से कोई दुश्मनी नहीं है। हम केवल तुमसे महाकली राक्षस के पाताल दुर्ग का रास्ता जानना चाहते हैं। हमें वह रास्ता बता दो, तब तुम अपने रास्ते जाना और हम अपने रास्ते चले जायेंगे।''

''जो पाताल दुर्ग गये हैं, वे कभी जीवित नहीं आये हैं। उस ओर जाकर, क्यों अपने पैर घिसना चाहते हो? पाताल दुर्ग जाना कोई बच्चों का खेल नहीं है। वहाँ कोई नहीं जा सकता। फिर किसी प्रकार यदि कोई पहुँच भी गया तो जैसा कि मैंने अभी कहा, वह जिन्दा वापस नहीं आएगा।'' राक्षस ने उन्हें कह कर डराया, फिर

बौने राक्षसने मज़ाक के स्वर में कहा, ''एक दो महीने यहीं घूमते रहो। महाकली राक्षस के आदमी आयेंगे और तुम्हारे हाथ पैर बाँधकर वे तुम्हें पाताल दुर्ग ले जायेंगे।''

''ऐसे नहीं, हमें चुपचाप बिना उसके जाने, उसके दुर्ग में जाना है और एक राजकुमारी को बचाकर लाना है। हमने उसको बचाने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ले रखी है।'' धूमक ने कहा।

''मेरी जवान पत्नी भी उसी के जेल में होगी, इसमें कोई शक नहीं है। उसी के नौकर तो थे, जो उसे जंगल में से उठा ले गये थे। मैं उस महाकली राक्षस को मारकर उसके खून से अपनी प्यास बुझाऊँगा। उसे हरगिज जीता नहीं छोड़ूँगा।'' पुलिन्द ने आवेश में कहा।

hindi.chandamama.com पर जातक कथाओं का आनन्द लें

चन्दामामा को अपनायें!

आप अपने न्यूज़पेपरवाले से चन्दामामा को नियमित रूप से देने के लिए अनुरोध करें। आप इसे आम न्यूज़-स्टैंड या प्रधान बुकशॉप से भी पा सकते हैं। चन्दा के लिए www.chandamama.com लॉग करें अथवा CSHOP 54646 को SMS भी कर सकते हैं।

बौना राक्षस बिना कुछ कहे, धूमक के पास आया, ''जो कुछ मुझे खबरदार करना था मैंने कर दिया है, आगे तुम्हारी इच्छा। अगर कुछ हो गया, तो मुझे बुरा भला न कहना। पाताल दुर्ग पहुँचने का मैं तुम्हें एक रास्ता बताता हूँ। मेरे साथ आओ।'' कहता वह उनको साथ लेकर, उजड़े मन्दिर के पास ले गया।

मन्दिर अभी कुछ दूर ही था कि धूमक ने रुककर कहा, ''क्या हम उस मन्दिर के आँगन में जा रहे हैं? वहाँ के क्रूर पशुओं के बारे में भी तो सोचो। हम उनके कारण कुछ देर पहले अच्छी आफ़त में फँस गये थे।''

''तुम जानते नहीं थे, इसलिए तुमने उन्हें छोड़ा। वे राक्षस के पालतू जानवर हैं। अगर तुमने जंगली फल उनके पास फेंके, तो वे बच्चों से भी सीधे हो जाते हैं।'' उसने कहा। फिर राक्षस ने पास के पेड़ से कुछ फल तोड़े।

धूमक आदि ने भी उसकी तरह कुछ फल तोड़े और मन्दिर के पास पहुँचते ही, उन्होंने उन्हें जंगली जानवरों के सामने फेंक दिये।

बौना राक्षस उनको मन्दिर में ले गया। कुछ अन्धेरी कोठरियों में से उनको ले गया। आखिर वह टूटी फूटी दीवार फाँद गया और नीचे एक खड्ड को दिखाते हुए उसने कहा, ''पाताल दुर्ग जाने के लिए एक ही रास्ता है और वह रास्ता यह है।''

धूमक और उसके साथियों ने सिर झुकाकर उस खड्ड में देखा। उसमें बड़े-बड़े मगर और सर्प थे। वे आपस में भिड़-भिड़ा से रहे थे। पर दीवार पर मनुष्यों को देखते ही, वे मुख खोलकर उनकी ओर देखने लगे। ***(और है)***

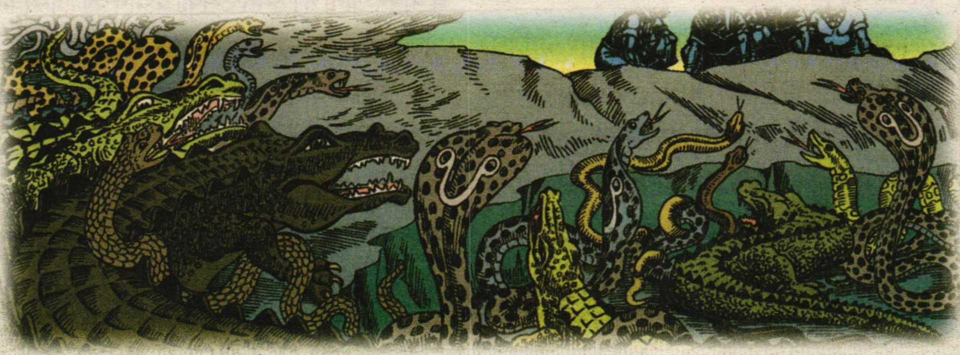

hindi.chandamama.com पर पढ़ें कि विष्णु हयग्रीव कैसे बनें

आग पर चलना

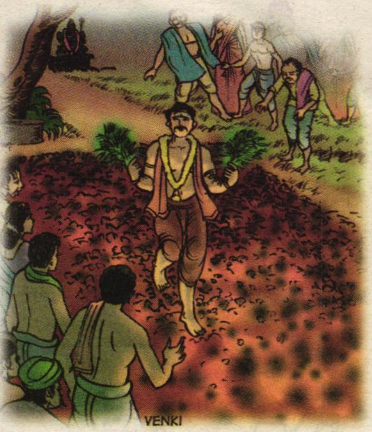

आप नंगे पैर पानी, रेत और कभी सड़क पर भी चल सकते हैं किन्तु क्या आप नंगे पैर आग पर चल सकते हैं? आग पर चलने के इस अनुष्ठान में दहकते कोयलों पर चलना शामिल है। इस प्रथा का व्यवहार मुख्यतः दक्षिण भारत, दक्षिण अफ्रीका, श्री लंका, मलेशिया तथा सिंगापुर में हिन्दुओं के द्वारा किया जाता है।

इस अनुष्ठान के संबंध में यह प्रचलित कथा है कि महाभारत के युद्ध के अन्त में कौरवों का विनाश देख कर द्रौपदी ने यह निर्णय लिया कि वह अपनी धर्म निष्ठा साबित करने के लिए आग पर चलेगी। बहुत से लोगों ने इस अनुष्ठान के विरोध में आवाज उठाई, उनका कहना है कि यह अनुष्ठान खतरनाक है, किन्तु अब भी छोटे गाँवों, कस्बों यहाँ तक कि शहरों में भी इसका प्रचलन पाया जाता है।

आसाम की आदिवासी प्रथा

आसाम के हरेक आदिवासी समुदाय की अपनी एक संस्कृति और कुछ परंपराएँ होती हैं। उनमें से एक कौतुक भरी धारणा दियो परम्परा है। दियोरी आदिवासियों का विश्वास है कि उनके पूर्वजों का आगमन हिमगिरि के पर्वतों से हुआ था जो उत्तरी आसाम में बस गए। उनके अनुसार दियो उथा (शैतानी आत्मा का चढ़ना) नामक शैतानी आत्मा किसी पुरुष या स्त्री विशेष में प्रविष्ट हो जाती है। वह पुरुष या स्त्री गाँव वालों का भविष्य बता सकती है और उसके शब्दों में सबकी दृढ़ आस्था होती है। ये दियो सामान्य भोजन नहीं करते, केवल मंदिर में बलि दिए गए जानवरों का खून पीते हैं। गाँववालों का ऐसा विश्वास है कि इस शैतानी आत्मा दियो की पकड़ में केवल महिलाएँ ही आती हैं। यद्यपि आज हम विज्ञान और टेक्नोलॅजी के क्षेत्र में काफी विकसित हो चुके हैं किन्तु आज भी यहाँ कई अद्भुत प्रथाएँ हैं जिनका प्रचलन विश्व-भर में समुदायों में पाया जाता है।

शकुनी का मन्दिर? hindi.chandamama.com पर पढ़ें मज़ेदार ख़बरें

शाही खाना

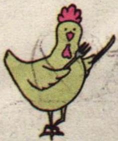

तंदूरी की भारत-यात्रा

तंदूरी भोजन विशेष रूप से मिट्टी के चूल्हे पर बनाया जाता है जिसे तंदूर कहते हैं। यह चूल्हा जमीन के अन्दर गड़ा होता है जिसके ऊपर खाना कच्चे कोयले या लकड़ी की आग में पकाते हैं।

****

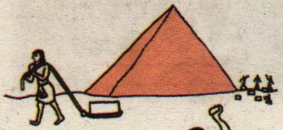

२००० वर्षों से भी पूर्व जब मिस्र के लोग पिरामिड बना रहे थे तब तन्दूर जैसे चूल्हों का प्रयोग मजदूरों के लिए पावरोटी (ब्रेड) सेंकने के लिए किया जाता था।

****

सिन्धुघाटी में मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के अवशेषों में भी तंदूर जैसा मिट्टी से लीपा हुआ एक छोटा सा चूल्हा (जिसका एक दरवाजा खुला है) पाया गया है।

****

अफगानिस्तान में हरेक के पास अपना चूल्हा नहीं होता अतः वे अपना आटा गूँद कर तन्दूर में सेंकने के लिए ले जाते हैं।

****

फारस से तन्दूरी भोजन की लोकप्रियता बढ़ते-बढ़ते अफ़गानिस्तान तक पहुँची, वहाँ से यह अरब द्वारा उत्तरी भारत लाया गया।

hindi.chandamama.com से चन्दामामा की रामायण खरीदें

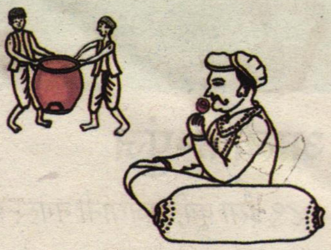

तंदूर को सुवाह्य (पोर्टेबल) बनाने का श्रेय बादशाह जहाँगीर को जाता है। वह जहाँ भी जाते तंदूरी खाना ही पसन्द करते थे।

****

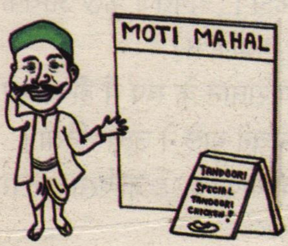

मोतीमहल पेशावर में कुन्दल लाल गुजराल एक होटल चलाते थे जिसका नाम था मोती महल। वहाँ गर्म-गर्म तन्दूरी मुर्गा (चिकन) परोसा जाता था जो शीघ्र ही ग्राहकों का सबसे पसंदीदा भोजन बन गया।

****

१९४७ के विभाजन के बाद गुजराल अपना होटल दिल्ली के दरियागंज में ले आए जहाँ उनका होटल पहले से भी ज़्यादा लोकप्रिय हुआ।

****

इरान के शाह ने एक बार कहा था...

भारत का भ्रमण मोती महल में खाए बिना वैसे ही है जैसे आगरा का भ्रमण बिना ताजमहल को देखे किया जाए।

****

तन्दूर ने भारत में लम्बी दूरी तय की। क्या आप इरान के शाह के स्वाद की साझेदारी करेंगे? एक बार खाकर देखें और जानें।

जवाहर लाल नेहरू को मोती महल का तन्दूरी मुर्गा (चिकन) इतना पसन्द था कि वे नियमित रूप से यह उनकी औपचारिक दावतों में शामिल होता। बहुत से विदेशी नेताओं को यह भोजन बहुत पसन्द था।

hindi.chandamama.com पर हमारे चन्दामामा हीरोज़ से मिलें

आलोक-पुंज

४८९ ईसा पूर्व, राजधानी नगर - राजगृह, मगध राज्य।

संध्या का अँधेरा घिर रहा था। दो आदमी-एक नाटा व काफी हद तक चौड़ा और दूसरा लंबा व बलिष्ठ, एक धूल भरी सड़क के किनारे चल रहे थे। दूसरी तरफ पदयात्री चल रहे थे, कुछ टोकरियाँ और पोटलियाँ उठाए थे, अन्य उनके दिन भर का काम समाप्त करते हुए मवेशियों को घर की तरफ हाँक रहे थे। उनके सामान एवं चाल को गहरी नजर से देखते हुए लंबे आदमी का ध्यान विशेष रूप से उनकी टुकड़ों में सुनाई देती बातचीत पर था।

''मैंने सुना वहाँ मामला कुछ गलत मोड़ ले रहा है,'' एक चरवाहे ने हाथ ऊपर उठा कर महल और किले के लिए इशारा करके शहर में बदलती परिस्थितियों पर कहा। ''युवराज कुछ अधिक बल नहीं दिखा रहे, क्यों है न?''

''पिता के पाप संतान के रूप में ही सामने आते हैं,'' सब्जी बेचने वाले ने उत्तर दिया।

''पर हम ने क्या पाप किए हैं जो ऐसा हम पर राज करे?''

''चुप्प!'' सब्जी वाले ने चेताया। हवा की भी आँखें होती हैं - और तुम्हारी बातों से देशद्रोह की झलक आती है।''

नाटा आदमी अपने लंबे साथी की तरफ मुड़ा और उसके चेहरे पर चिंता की रेखाएँ देखीं। ''इन बकवास बातों पर कान मत दो,'' उसने धीमी आवाज़ में सलाह दी।

''कैसे न दूँ, जीवक ? ये मेरे लोग हैं - और मेरे बेटे और मेरे राज्य के बारे में बोल रहे हैं।'' वह रुका। ''और क्या वे सही नहीं हैं?''

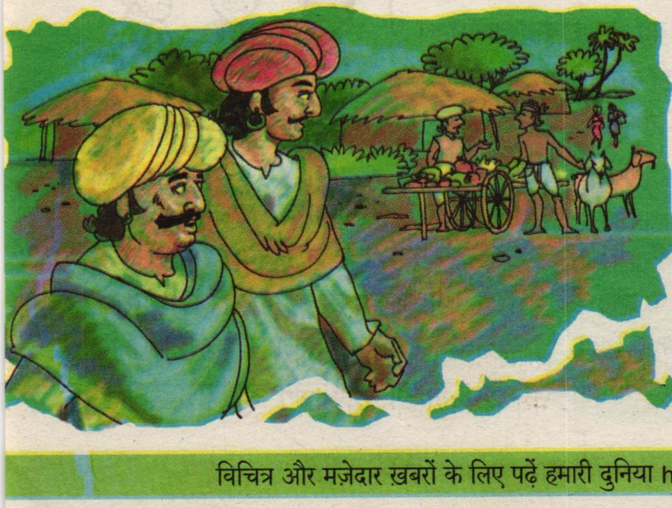

जीवक शब्दों को सावधानी से चुनता हुआ दिखा दिया। ''मैं राजकुमार उदयिन के बारे में नहीं बोलूँगा, महाराज - लेकिन यह भी जानता हूँ कि जो भी आपके बारे में गलत बोलेगा उसका दुख पाना निश्चित है।''

''प्रजा में मेरे सबसे वफादार,'' वह बुदबुदाया। तुम्हें तो मेरा एक दरबारी

विचित्र और मज़ेदार ख़बरों के लिए पढ़ें हमारी दुनिया hindi.chandamama.com पर

होना चाहिए था, जीवक। आश्चर्य! तुम आखिर चिकित्सक कैसे हो गए?''

''संभवतया इसलिए कि मैं चापलूसी नहीं कर सकता, महाराज।''

''क्या तुम अभी भी मेरी चापलूसी करोगे, जीवक ? तुम जबकि हमारी यात्रा का उद्देश्य जानते हो।''

चुप्पी की जो दीवार अस्थायी रूप से हटी थी, वह वापस बन गई और राजा अजातशत्रु के विचार निर्दयता से उन्हें भूतकाल में ले गए।

***

४९३ ईसा पूर्व, राजकीय उद्यान, राजगृह।

''**जो** तुम्हारे भले की नहीं सोचता ऐसे निर्दयी राजा की तुम कब तक सेवा करोगे?'' एक दबी हुई फुसफुसाहट उसके कानों में पड़ी।

उसने अपना सिर हिलाया। ''मेरे पिता निर्दयी नहीं हैं।''

''कोई राजा जो अपने बेटे की और अपने लोगों की इच्छाओं को जानने से इंकार कर दे, वह निर्दयी है,'' उस विश्वासघाती फुसफुसाहट ने फिर कहा। ''तुम्हारे पिता हर ऐरे-गैरे को, यहाँ तक की अभय को उत्तराधिकार के योग्य समझते हैं''

''अभय ! अम्बपाली का बेटा !''

''क्या तुम एक गणिका के पुत्र को राज करते हुए देखोगे ? तुम, चेलाना के पुत्र, प्रसिद्ध लिच्छवी चेतक के प्रपौत्र ? यह मगध का भाग्य नहीं हो सकता। तुम योग्य हो एवं राज करने की पात्रता रखते हो''

''क्या मैं, देवदत्त?''

''हाँ, कुनिका - यही तुम्हारी नियति है। राजा बिम्बसार को मार दो - मगध को अपने लिए ले लो....''

वह डर के मारे सिहर उठा परंतु उसे लगा कि देवदत्त शायद सही है। देवदत्त गौतम, बुद्ध से विरोध में लड़ा, जैसे उसने, अजातशत्रु ने, अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया। देवदत्त सही था। वह अपने पिता को मार देगा।

***

४८९ ईसा पूर्व, सदाबहार वन, राजगृह बाहरी क्षेत्र।

अजातशत्रु ने स्वयं को झटके से काली यादों की खोह से निकाला जिन्होंने उसे तकरीबन दबा ही दिया था। वे धूल भरी सड़क से बाहर आ चुके थे और गहरे सदाबहार वन के बिलकुल पास खड़े थे; वह अपनी यादों में इतना तल्लीन था कि उसने बमुश्किल इस पर गौर किया। जीवक ने राजा की भय से आतंकित आँखों में देखा। ''स्वयं को

गरुड़ जैसी और कॉमिक्स चाहिए? एसएमएस COMIC <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

निराशा में मत झोंको। धैर्य रखो, राजन्।''

''तुमने अभी तक बताया नहीं कि हम कहाँ जा रहे हैं।''

''उसके पास जो आपको सही सलाह देगा। जो आपको दर्द से राहत देगा और पाप से मुक्त कराएगा।''

''जीवक, मैं अपनी पाप मुक्ति के लिए छः प्रधान गुरुओं से मिल चुका हूँ - लेकिन वे तक मुझे शांति प्रदान न कर सके। यह सब बेतुका है।'' जीवक शांत था। ''क्या हम उनसे अकेले मिलेंगे।''

''नहीं, महाराज। उनके बहुत से अनुयायी हैं - यहाँ १२५० हैं, अंतिम गिनती होने तक।''

''तो कितनी दूर है?''

''हम तकरीबन वहीं हैं।''

चाँद निकल चुका था। दूधिया चाँदनी जंगल पर बिखरी हुई थी, जो उसे स्वार्गिक रूप दे रही थी। पेड़ उन पर काली छायाकृतियाँ बना रहे थे। हर कोने में, उन पर हमला करने को तैयार, खतरा छिपा दिखाई दे रहा था। एक भयावह शांति पूरे वन में छा हुई थी।

अचानक अजातशत्रु को अपने अंदर साँप की छुअन से उत्पन्न डर का अहसास हुआ। क्या ये सब एक जाल है? बिना अंगरक्षकों के, इस यात्रा पर छद्म वेश में निकलना जीवक ने ही तय किया था - इस सब के पीछे उसका क्या उद्देश्य था? ''जीवक, तुम कोई चाल तो नहीं चल रहे हो? मेरे दुश्मनों के लिए मुझसे विश्वास-घात तो नहीं कर रहे? ऐसा कैसे हो सकता है कि इतने बडे जनसमूह के होते खाँसने या छींकने तक की कोई आवाज़ नहीं है?''

''यहाँ कोई धोखे का खेल नहीं है, महाराज।''

अजातशत्रु को लगा कि उसके शक से जीवक को शायद चोट पहुँची हो - लेकिन चिकित्सक की आवाज़ हमेशा की तरह शांत बनी रही।

और फिर, पेड़ पीछे छूट गए। एक बड़े खुले स्थान ने उनका स्वागत किया। यहाँ वहाँ कुछ रोशनी टिमटिमा रही थी। संन्यासियों जैसे भगवा वस्त्र पहने, कुछ आदमी उनके चारों तरफ आ गए। उनमें से एक सामने आया और शांति भंग करते हुए बोला, ''आपका स्वागत है, महाराज अजातशत्रु। ईश्वर करे यहाँ आपकी उपस्थिति आपको शांति और प्रकाश प्रदान करे।''

अप्रत्याशित रूप से, राजा को अपने अंदर आश्चर्य व तृष्णाओं का एक उबाल महसूस हुआ जो इतना शक्तिशाली था कि वह स्वयं को रोक न सका और बोला, ''मेरा बेटा इन लोगों की तरह शांत क्यों नहीं है?''

और अधिक मज़ेदार कहानियाँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

जीवक मुस्कुराया, "राजन, हम आ चुके हैं और यहाँ आपको उनसे मिलना ही चाहिए।" और फिर जादू की तरह भगवा पोशाकों का समुद्र जैसे फटता चला गया और सबसे अंत में एक विशाल वृक्ष के नीचे विराजमान थे.........।

"गौतम, बुद्ध," अजातशत्रु ने गहरी साँस ली। उसकी धड़कन बढ़ गई। अगले कुछ पलों में सब कुछ धुँधला नज़र आने लगा। उसके कदम खुद-ब-खुद बढ़ चले, हाथ जुड़ गए, वह उस दिव्य पुरुष के चरणों में झुक गया जिसकी झलक मात्र से नर-नारी करुणा से पिघल उठते थे।"

और वह देवदत्त के बुद्ध की हत्या के प्रयत्न जैसे शब्दों से प्रभावित हो गया था।

"मुझे देवदत्त की बात नहीं सुननी चाहिए थी," वह स्वयं से बड़बड़ाया। "और फिर भी..... मैंने सुना।" और तब सब बाँध टूट गए। वर्षों का नैराश्य, क्रोध, ग्लानि और पश्चाताप उसकी आँखों से बह निकला और पेड़ के नीचे नेत्रों में दिव्य ज्योति लिए, हाथ जोड़ कर, शांत बैठे उस प्रबुद्ध के पग पखारने लगा।

"स्वामी, मुझ पतित को इसी रूप में स्वीकार कीजिए ताकि भविष्य में मैं निश्चेष्ट वैरागी हो सकूँ।"

कुछ प्रहर बिताकर वे शहर वापस आ गए। जीवक ने गौर किया कि राजा आत्मिक संतोष से लबालब हैं। उन की आँखों में प्रकाश था और प्रसन्नता उनके आन्तरिक आन्द से वातावरण ओतप्रोत हो रहा था।

चिकित्सक बौद्ध भिक्षुकों के पास खड़ा था और अजातशत्रु और बुद्ध के बीच क्या बातें हुईं, वह सुन नहीं पाया था। उनके बीच क्या हुआ यह जानने की लालसा उसके अंदर जग उठी।

"मैं प्रसन्न हूँ, महाराज, कि हमारी यात्रा निष्फल नहीं गई।" जीवक ने धीरे से कहा। "महाराज, इस मुलाकात से आप लाभान्वित जान पड़ते हैं।"

"मैं शुद्ध हो गया, जीवक।" अजातशत्रु ने चिकित्सक के हाथ थाम लिए। "तुम्हारा आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मेरी कृतज्ञता स्वीकार करो, मेरे मित्र।"

"यह सहायता करके मैं प्रसन्न हूँ लेकिन - अगर यह अभद्रता न हो तो क्या मैं यह जान सकता हूँ कि बुद्ध आपसे क्या बोले?"

राजा अजातशत्रु मुस्कुराए – एक परमानंदमयी हँसी उनके मुख मंडल पर खेल गई जिसने सब कुछ स्पष्ट कर दिया। "कुछ भी नहीं।"

और जीवक सब समझ गया।

- पवित्रा श्रीनिवासन

विरासत की प्रश्नोत्तरी के जवाब दें। CIHQ <आपका उत्तर> भेजें 54646 पर

केवलादेव नेशनल पार्क

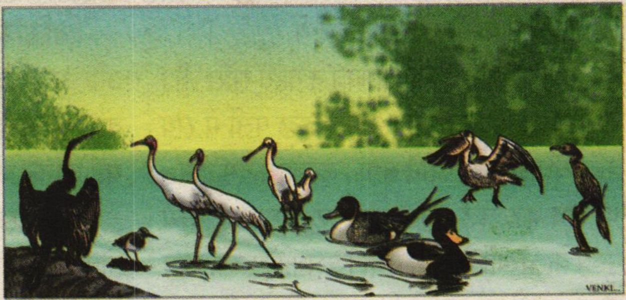

केवलादेव नेशनल पार्क भरतपुर के विख्यात पक्षीवन के रूप में जाना जाता है। यह राजस्थान के भरतपुर शहर से २ कि.मी. दक्षिण पूर्व में स्थित है। यह एक कृत्रिम रूप से निर्मित और संचालित नम भूमि क्षेत्र है जो हिन्द-गंगा की समतल भूमिका उच्चतर भाग है। इस वन का नाम केवलादेव (शिव) मंदिर के नाम पर पड़ा जो कि इसी के सीमा-क्षेत्र में है।

सन् १८५० तक यह भरतपुर के राजा का शिकार क्षेत्र था और प्रति वर्ष यहाँ बतखों के शिकार का आयोजन अंग्रेज़ वाइसराय के सम्मान में किया जाता था। सन् १९३८ में लॉर्ड लिनलिथगो जो भारत के तत्कालीन महाराज्यपाल थे, द्वारा केवल एक शिकार में ४,२७३ से भी अधिक (नील रस तथा चैती जैसे) पक्षी मारे गए। भारत की स्वाधीनता के बाद भी १९७२ तक इस प्रान्त के राजसी शासकों को शिकार का अधिकार मिलता रहा। मुख्यतः यह पार्क अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, चीन तथा साइबेरिया से आनेवाली मुर्गाबियों का शीतकालीन आवास के लिए प्रमुख केन्द्र है। लगभग ३६४ प्रकार के पक्षी यहाँ अभिलिखित हैं जिनमें साइबेरिया के दुर्लभ सारस भी शामिल हैं।

यूनेस्को ने १९८५ में इसे विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया।

आने का अनुकूल समयः दर्शकों के लिए इस अभयारण्य में आने हेतु नवम्बर से मार्च तक के महीने सर्वोत्तम हैं। पार्क प्रतिदिन सुबह से शाम तक खुला रहता है।

वहाँ कैसे जाएँः भरतपुर (राजस्थान) दिल्ली से दक्षिण-पश्चिमी ओर नेशनल हाई वे-११ पर स्थित है और यह आगरा (६० कि.मी.), जयपुर (१८० कि.मी.), और नई दिल्ली (१७५ कि.मी.) से फतेहपुर सीकरी और आगरा होते हुए आने वाली सड़कों से जुड़ा है। नई दिल्ली से आनेवाली कई रेलगाड़ियाँ भरतपुर में रुकती हैं।

भारत का कौन सा प्रान्त मसालों के बगीचे के रूप में जाना जाता है?

(a) केरल (b) कर्नाटक

CIHQ <space> <a/b> 54646 पर SMS कर दो और अपने मोबाइल पर 'चन्दमामा इण्डिया हेरिटेज प्रश्नोत्तरी' खेलो।

hindi.chandamama.com पर पढ़ें महान लोगों की जीवन की झाँकियाँ

भूल का सुधार!

केशवगिरि के वल्लभराय और सारंग एक ही प्रकार का व्यापार करते थे। ज्वार, बाजरा आदि अनाज किसानों से खरीदते थे और उन्हें शहर की हाट में बेचते रहते थे। किन्तु अचरज की बात तो यह थी कि वल्लभराय द्वारा बेचे जाने वाले अनाज पर अच्छा दाम मिलता था, पर सारंग को अपना अनाज सस्ते दाम में बेचना पड़ता था। इस वजह से उसे नुक़सान पहुँचता था।

वल्लभराय ने एक दिन इसी बात का जिक्र करते हुए सारंग से व्यंग्य भरे स्वर में कहा, ''तुम जो भी व्यापार करोगे, उसमें तुम्हें नुक़सान ही पहुँचेगा। बेशक यह तुम्हारा दुर्भाग्य है। मैं भले ही मिट्टी ले जाऊँ, सोने की तरह बिक जाती है। यह मेरा सौभाग्य है।'' सारंग को लगा कि वह जान-बूझकर उसका अपमान कर रहा है। वह चुपचाप वहाँ से चला गया और घर जाकर पत्नी कुसुम से यह बात कही।

कुसुम ने कहा, ''वल्लभराय को अपनी कमाई पर घमंड है, इसीलिए आपका मज़ाक उड़ा रहा है। किन्तु उसकी बातों में सच्चाई भी है। मेरी बात मानिये, इस व्यापार को छोड़ दीजिये और कहीं नौकरी कीजिये।'' पत्नी ने यों सलाह दी।

पत्नी की बातें उसे अच्छी नहीं लगीं और वह सोच में पड़ गया। खूब सोचने के बाद वह सूद के एक व्यापारी के पास गया और दादा के दिये हुए सोने के कड़े को बेच डाला और रक़म ली। घर लौटकर उसने पत्नी से कहा, ''खूब कमाने के बाद ही घर लौटूँगा।''

फिर वह एक ऐसे शहर में गया, जहाँ बंदरगाह था। वहाँ की हाट में इमली, गुड़, मिर्च आदि माल खरीद कर उन्हें अच्छे दाम में बेचने लगा। समय ने भी साथ दिया, इसलिए वह धीरे-धीरे कमाने लगा। पाँच सालों में उसने एक लाख अशर्फ़ियाँ कमायीं। तब जाकर उसने घर लौटने का निर्णय लिया और निकल पड़ा।

एक बार वल्लभराय भी उसी सराय में आया,

और कहानियों के लिए आएँ hindi.chandamama.com

वहाँ सारंग भी था। एक-दूसरे से मिलकर उन्हें बेहद खुशी हुई। बातों-बातों में जब वल्लभराय को मालूम हुआ कि सारंग ने लाख अशर्फियाँ कमा लीं तो उसने उसका अभिनंदन किया और दोनों ने स्वस्थल लौटने का निश्चय किया।

परंतु, उस रात को एक दुर्घटना घटी। आधी रात को लुटेरे उस सराय में घुस आये और वहाँ रहनेवालों पर टूट पड़े। जो भी उन्हें रोकता था, वे उन्हें खूब पीटने लगे और उनके माल को लूटने लगे। इस गड़बड़ी में सारंग के सिर को भारी चोट लगी। सांस लेना भी उसके लिए मुश्किल हो रहा था। उसने धीमे स्वर में वल्लभराय से कहा, ''वल्लभ, तुम तुरंत यहाँ से भाग जाना। यह धन की थैली मेरी पत्नी के सुपुर्द करना,'' कहते हुए वह बेहोश हो गया।

वल्लभराय बड़ी ही अक़्लमंदी से लुटेरों के हमले से बच निकला। सारंग की दुःस्थिति पर दुखी होते हुए तीन दिनों के बाद घर पहुँचा। धन की थैली जब सारंग की पत्नी को सौंपने निकला तब उसकी पत्नी ने उसे रोकते हुए कहा, ''जब लुटेरे सराय में घुस आये, तब यह रक़म वह आपको नहीं देता तो क्या होता? लुटेरों के हाथों में चली जाती थी न? उसने 'हाँ' कहा।

''तब इसका यह मतलब हुआ कि सारंग ने अपना धन खो दिया। अच्छा हुआ, आप उस समय वहाँ मौजूद थे। लुटेरों से आप बच निकले, यह आपका सौभाग्य है, आपकी अक़्लमंदी है। मेहनत करके सारंग ने जो धन कमाया, उसे माँगने मरा सारंग थोड़े ही लौट आयेगा। कोई गवाही भी नहीं है।''

''पर, बेचारी कुसुम तकलीफों में डूबी हुई है। इतना बड़ा द्रोह करना महापाप है।'' सारंग के परिवार के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए वल्लभ ने कहा।

''क्या दुनिया भर में इससे अधिक कष्ट सहनेवाले नहीं हैं? उन्हें लेकर तुम क्यों दुखी हो रहे हो? मेरी बात मानो और यह धन अपने ही पास रख लो, समझ लो, यह हमें भगवान का दिया वरदान है। एक महीने के अंदर ही अपनी जायदाद बेच डालेंगे और शहर जाकर आराम से रहेंगे।'' वल्लभ को पत्नी की सलाह ठीक लगी।

सराय में जो लूट हुई, उसमें सारंग को बड़ी चोट लगी, पर वह मरा नहीं। बिलकुल ठीक और तंदुरुस्त होने में छे महीने लगे। केशवगिरि लौटा

इस आर्काइव को रेट करें। एसएमएस ARCHIVES <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

तो देखा कि उसके परिवार की स्थिति बड़ी ही दयनीय है। वल्लभराय के धोखे पर उसे बड़ा दुख हुआ। पर, बेचारा कर भी क्या सकता था? फिर से वह मेहनत करके परिवार के भार को संभालने लगा।

वल्लभराय की इकलौती बेटी थी, वनजा। वह शादी की उम्र की हो गयी। जब वह एक बार नाव में बैठकर नदी पार कर रही थी, तब नाव उलट गयी। पानी में गिरकर वह डूबने ही वाली थी, कि वसंत नामक एक युवक ने उसे बचाया। वनजा ने उसे अपनी कृतज्ञता जतायी।

दूसरे दिन शाम को जब वह माता-पिता के साथ मंदिर आयी, तब वहाँ उसने वसंत को देखा। वनजा ने अपने माता-पिता से उस दुर्घटना की याद दिलाते हुए कहा कि इसी युवक ने मुझे बचाया, नहीं तो मैं मर ही जाती।'' साथ ही उसने माता-पिता से कहा कि मैं इस युवक से विवाह करना चाहती हूँ।

वल्लभराय बेटी की किसी भी बात को टालता नहीं था। उसकी हर इच्छा पूरी करता था। उस युवक के बारे में पूछताछ करने पर उन्हें मालूम हुआ कि वह किसी गाँव का रहनेवाला है और यहाँ एक स्कूल में अध्यापक है, और यहाँ वह अपने मामा के घर में रह रहा है।

वल्लभराय ने अपनी बेटी की शादी वसंत से करने का निश्चय किया और शादी की तैयारियों में लग गया।

शादी का दिन आ ही गया। वसंत दुल्हा बनकर अपने माँ-बाप के साथ विवाह मंडप में आया।

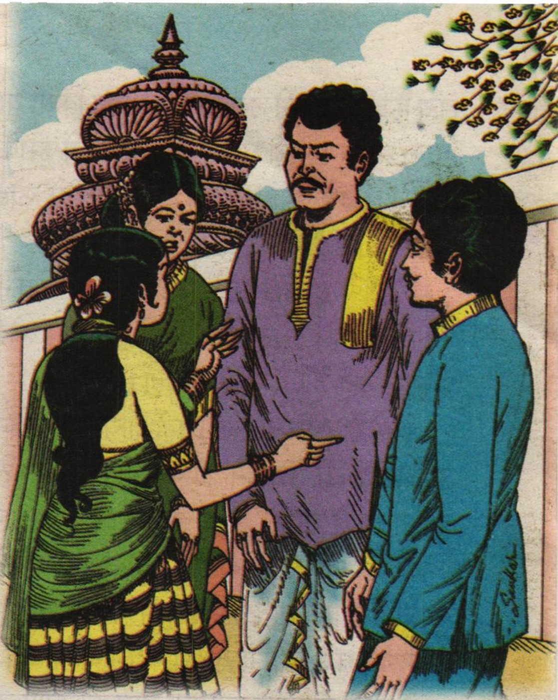

उन्हें देखते ही वल्लभराय भौचक्का रह गया। वे और कोई नहीं थे, साक्षात् सारंग दंपति थे।

''मुझसे बदला लेने के लिए तुमने अपने बेटे को अस्त्र बनाया? मेरी लाड़ली बेटी की ज़िन्दगी से खिलवाड़ करने तैयार हो गये हो?'' वल्लभ ने क्रोध-भरे स्वर में सारंग से कहा।

''मेरी बात शांत होकर सुनो दोस्त। इसमें मेरा कोई हस्तक्षेप नहीं है। तुमने मेरा धन नहीं लौटाया, तो क्या हुआ? समझना, दहेज में वह धन मुझे दे रहे हो। बेकार क्यों नाराज़ होते हो?'' सारंग ने शांत स्वर में कहा।

''तुम यही चाहते हो न कि अपने बेटे को मेरा दामाद बनाओ और मेरी पूरी जायदाद अपनी बना लो।'' वल्लभ ने नाराज़ होते हुए कहा। वल्लभ की बात सुन कर सारंग को आश्चर्य हुआ। यह

किसी तकनीक के बारे में जानना है? एसएमएस FEEDBACK <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

सच है कि वल्लभ ने उसके साथ धोखा किया था किन्तु स्वभाव से ही सरल सारंग के मन में उसके प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी। न ही उसमें कोई कपट था।

"मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है। शादी रोकने का ही तुम्हारा इरादा है तो रोक दो। मुझे कोई एतराज नहीं है।" सारंग ने कहा।

इतने में वल्लभ की पत्नी वहाँ आयी और उसने पति को शादी रोक देने की राय दी। उसने पति को अलग ले जा कर कहा, हो सकता है कि इस विवाह में सारंग का हाथ न हो, किन्तु हमारे धोखे का दुष्परिणाम हमारी बेटी को भुगतना पड़ सकता है। मुझे भय है, मैं कोई खतरा नहीं लेना चाहती।

"शादी होने ही वाली है। अगर रुक जाए तो हमारी बेटी से कौन शादी करेगा? उस दिन दुर्भाग्य-वश तुम्हारी बात मान ली और सारंग के साथ द्रोह किया। अब उस ग़लती को सुधारने का समय आ गया। इस अवसर को हाथ से फिसलने नहीं देना चाहिए। मैंने द्रोह किया, फिर भी सारंग के मन में मेरे प्रति घृणा नहीं, वह बदला लेना नहीं चाहता। उल्टे हमारी पोल न खोलकर हमारे साथ सद्व्यवहार कर रहा है। नीतिवान सारंग की बहू और गुणवान वसंत की पत्नी बनकर हमारी बेटी सुखी होगी। मैं पूर्णतया इस विवाह के पक्ष में हूँ। यह शादी होकर ही रहेगी।" इसके बाद वल्लभ ने सच्चे दिल से सारंग के सामने अपने व्यवहार के लिए क्षमा माँगी। दोनों मित्र एक दूसरे के गले लगे और उनकी आँखों से वहते आँसुओं में सारी शिकायतें बह गईं।

इसके बाद, वनजा-वसंत का विवाह हुआ। दोनों परिवारों में अब आनंद ही आनंद है। सच्चे मन से अपनी भूल को मानना ही सच्चा प्रायश्चित है, जैसा कि वल्लभ ने किया। *- पीयूष*

अपने चन्दामामा का मूल्यांकन करो

क्या आप इसमें और भी समसामयिक कहानियाँ जोड़ना चाहते हैं?

(a) हाँ (b) नहीं

आप अपना उत्तर RYC <a/b> लिखकर 54646 पर SMS कर दो।

अपने चन्दामामा का मूल्यांकन करो
जून २००९ का परिणाम:
a: 36%; b:64%

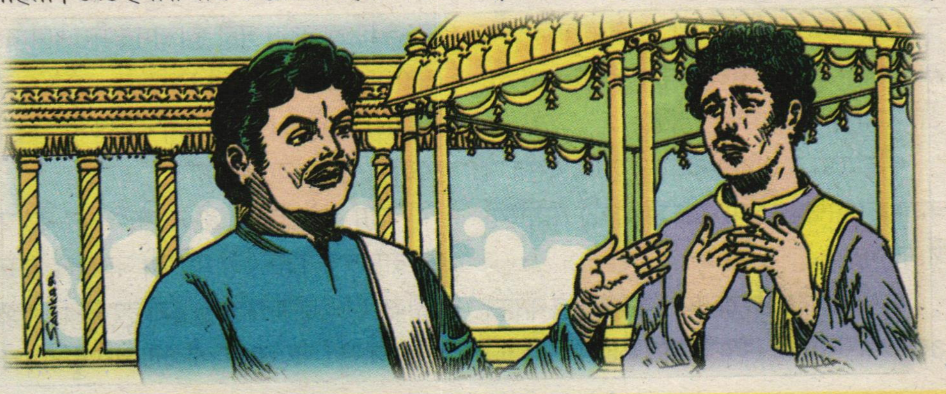

इस आर्काइव को रेट करें। एसएमएस ARCHIVES <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

गृहलक्ष्मी

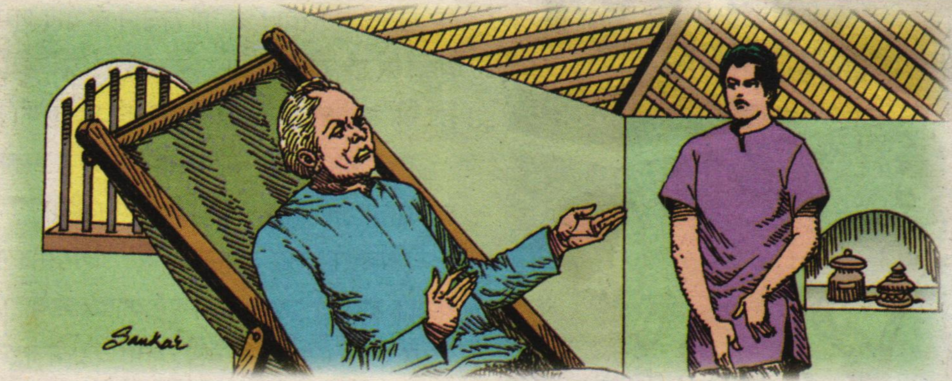

शारदापुर के शिवराज की तीव्र इच्छा थी कि उसका अपना एक घर हो। शिवराज के पिता की भी यही इच्छा थी, पर इस इच्छा की पूर्ति के पहले ही उसकी मौत हो गयी। जब वह जीवित था, तब कभी-कभी अपने बेटे से कहा करता था, ''पक्षियों का भी अपना एक घोंसला होता है। मनुष्य के लिए आपना एक घर होना नितांत आवश्यक है। मैंने इसके लिए कड़ी मेहनत की, पर अपने सपने को साकार नहीं कर सका। कम से कम तुम यह काम कर सको तो मुझे बड़ी खुशी होगी, मेरी आत्मा संतुष्ट होगी।''

पिता के जीवित रहते समय ही शिवराज ने बचत शुरू कर दी। क्रमशः बचत का धन बढ़ता गया। घर के दाम भी उसी अनुपात में बढ़ते जाने लगे। शिवराज इसे देखते हुए चिंतित हो उठता था। घर के दाम और बचत की रक़म के अंतर को देखते हुए उसे डर लगने लगा। फिर भी, जिस साल पिता की मौत हुई, उस साल से लेकर घर खरीदने की इच्छा उसमें अति तीव्र होती गयी। किसका घर बिकनेवाला है, वह इसकी जानकारी प्राप्त करने लगा।

इन परिस्थितियों में उसे मालूम हुआ कि हरिनारायण का घर बिकनेवाला है, क्योंकि वह घर बेचकर शहर में जाकर बसना चाहता है। शिवराज को हरिनारायण के घर के बारे में पूरी जानकारी थी। वह पक्की छत का एक सुंदर घर है। चारों ओर चहारदीवारी है, पिछवाड़े में तरकारियों और फूलों के पौधे हैं। शिवराज को लगा कि मैं इस घर को खरीद सकूँगा तो मुझसे बढ़कर भाग्यवान कोई नहीं होगा। वह हरिनारायण से मिला और घर के दाम के बारे में बात की।

हरिनारायण ने शिवराज से कहा, ''यह सच है कि मैं घर बेचनेवाला हूँ। लेकिन पच्चीस हज़ार अशर्फियों से कम दाम में किसी भी हालत में नहीं बेचूँगा।'' उसने साफ़-साफ़ कह दिया।

शिवराज के लिए यह बहुत बड़ी रक़म थी।

बालक भीम जैसी और कॉमिक्स चाहिए? एसएमएस COMIC <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

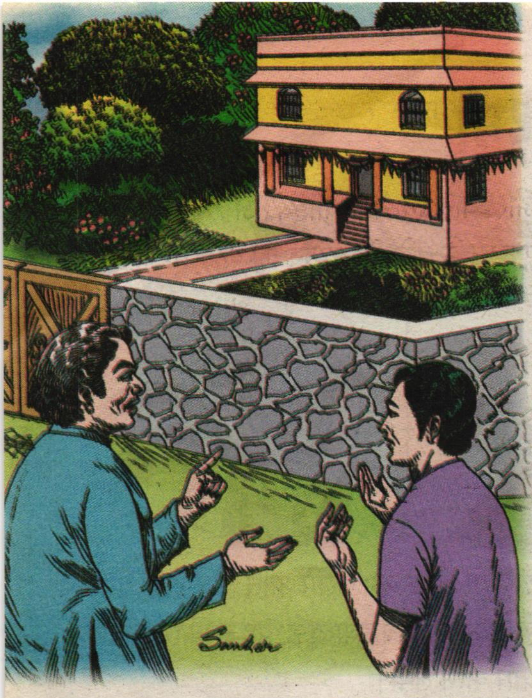

अब तक कड़ी मेहनत करने के बाद भी वह पंद्रह हज़ार अशर्फ़ियाँ ही जमा कर पाया था। इसलिए कुछ कहे बिना वह लौट आया। तब से लेकर वह सो भी नहीं पाया।

शिवराज की पत्नी कमला पति की चिंता देख नहीं सकी। वह अपने पति से बहुत प्यार करती थी। आखिर उसने एक दिन कहा, ''जरूरत पड़े तो मेरे गहने बेच डालिये। समय ने अगर साथ दिया तो बाद में खरीद लेंगे।'' उसने पति को यों सलाह दी।

शिवराज ने खुश होकर पत्नी के सोने के गहने बेच डाले। सुनार ने उन गहनों के लिए पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ मात्र दीं।

और पाँच हज़ार अशर्फियाँ इकट्ठा करने लिए उसे तरह-तरह की बाधाओं से गुज़रना पड़ा। थोड़ी सी रक़म दोस्तों से कर्ज में ली, तो थोड़ी और रक़म रिश्तेदारों से। आख़िर हरिनारायण का घर खरीद ही लिया। घर को सजाने के बाद शुभ मुहूर्त पर गृहप्रवेश किया। इस बात पर उसे खुशी हुई कि आख़िर पिता की इच्छा पूरी कर सका।

पंद्रह दिनों के बाद कोदंड नाम का दोस्त उसके घर आया और पूछा, ''घर कितने में खरीदा?''

''पच्चीस हज़ार अशर्फ़ियों में'', शिवराज ने कहा। आश्चर्य प्रकट करते हुए कोदंड ने कहा, ''इस घर के लिए इतनी बड़ी रक़म! यह तो बहुत ज्यादा है, आखिर क्या सोच कर तुमने इतनी कीमत स्वीकार कर ली?''

शिव उसकी बातें सुनकर चिंतित हो उठा। एक और हफ़्ते के बाद तीर्थयात्रा से लौटे उसके ससुर ने भी कहा, ''इतना दाम चुकाने के लिए इस घर में रखा ही क्या है? तुमने मेरी बेटी के गहने भी बेच डाले तो मैंने सोचा कि यह कोई बड़ा घर होगा। तुमने तो दुगुना दाम देकर खरीदा। अगर मैं उस समय यहाँ होता तो इस घर को खरीदने से रोकता।''

कुछ और परिचित लोगों ने भी कहा, ''तुमने इसे ख़रीदने में जल्दबाजी की। तुमने तो हमसे इसके बारे में कभी जिक्र ही नहीं किया। अगर हमसे कहते तो हरिनारायण से बातें करके दाम कम करवाते।'' उन्होंने यों टिप्पणी की।

इन सब बातों को सुनते हुए शिवराज को लगा कि इतना दाम देकर घर खरीदकर मैंने शायद ग़लती की। वह मन ही मन पछताने लगा। उसकी

जातक कथाएँ पढ़ें hindi.chandamama.com पर

पत्नी ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा, "जो होना था, वह हो गया। अब चिंतित होने से क्या फ़ायदा?" उसने पति का दुख दूर करने की पूरी कोशिश की फिर भी उसका दुख दूर नहीं हुआ।

उसी समय ज्ञानानंद नामक एक साधु उस गाँव में आये। गाँव के कुछ लोग उनसे मिलकर सलाहें लेने लगे। जब लोगों ने शिवराज को उनके बारे में बताया तो वह चुप रहा, फिर कई लोगों के समझाने पर शिवराज भी उनसे मिला और अपने मन की पीड़ा व्यक्त की।

ज्ञानानंद ने उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं और कहा, "शिवराज, घर खरीदने का जो विचार तुम्हारे मस्तिष्क में आया, वही बहुत बड़ी बात है। अपने सपने को साकार करने के लिए तुमने जो मेहनत की, पत्नी का जो सहयोग पाया, रिश्तेदारों ने जो सहायता पहुँचायी, ये सब उससे भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। अब रही घर के दाम की बात। जब कोई अच्छा काम करने लगता है तो लोग उसपर तरह-तरह की टिप्पणियाँ करते हैं, ताने कसते हैं, तुम्हारे आनंद को दुख में परिवर्तन करने में उन्हें सुख मिलता है। तुम्हें इनकी ओर ध्यान देना नहीं चाहिये। अब तुम्हारा अपना एक घर है, इसे ही भगवान की कृपा समझो। घर को लक्ष्मी मानो, चिंता का त्याग करो और जो कर्ज लिये उसे लौटाने के प्रयत्नों में लग जाओ। तुम्हारा भला होगा", उन्होंने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा।

शिवराज उस रात को घोड़े बेचकर सोया। इसके बाद जो भी घर के दाम के बारे में टिप्पणी करता, उससे वह कहता, "इतना अच्छा घर मिला, यही मेरा सौभाग्य है। जितना भी देते, कम ही समझो।"

ऐसा कहने के बाद कोई भी उसके पास आने का साहस नहीं कर पाया। शिवराज ने मेहनत की और सब कर्ज चुका दिये। दो सालों के बाद उसने खेत भी खरीदा और भरसक दूसरों की सहायता करते हुए निश्चिंत होकर जीवन बिताने लगा।

- *नागेश्वर*

कोई चुटकुला भेजें। एसएमएस CJOKE <आपका चुटकुला> 54646 पर

नाइक-भूपति टैनिस विलेज

'टैनिस विलेज' की स्थापना सन् १९९५ में बंगलौर में की गई, जिसका उद्देश्य था खेल को सही प्रकार से सिखाना। अकादमी का आरंभ महेश भूपति के पिता द्वारा अपने पुत्र को प्रशिक्षण दिलाने के लिए हुआ था। सी जी के. भूपति जो स्वयं टैनिस के खिलाड़ी हैं तथा पन्द्रह वर्षों के लम्बे समय से टैनिस से जुड़े हैं। उनका विश्वास है कि, ''आज देश को विश्वस्तरीय सुविधाओं की आवश्यकता है, जहाँ टैनिस के उत्साही मिल सकें और नियमित रूप से अपने कौशल का अभ्यास करें और अपने बच्चों को इस खेल में आगे बढ़ने में सहायता कर सकें।'' विश्वस्तरीय टैनिस अकादमी की स्थापना का यह स्वप्न श्री दयानन्द पाई के उदार सहयोग द्वारा साकार हुआ, जो एक धनाढ्य भूस्वामी हैं और खेलों को प्रोत्साहन देनेवाले हैं। खेल-पोषाक निर्माण की अग्रणी कम्पनी 'नाइके' टैनिस गाँव के साथ जुड़ी है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्राप्ति के लिए टैनिस अकादमी का लक्ष्य युवा प्रतिभाओं को प्रशिक्षण की सर्वोत्तम सुविधाएँ प्रदान करना है जिससे न केवल उन्हें टैनिस की बुनियादी जानकारी प्राप्त हो बल्कि खेल के प्रति उनका उत्साह वर्धन भी हो। अकादमी के संरक्षक कर्नाटक के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री एस. एम.कृष्णा हैं जो टैनिस के प्रबल प्रशंसक भी हैं।

''हमने केवल एक मिट्टी के कोर्ट से आरंभ किया था, लेकिन आज हमारे पास आधुनिकतम छः कृत्रिम टैनिस कोर्ट हैं जो आस्ट्रेलिया के ओपन कोर्ट के जैसे हैं, संभवतः यही हमारी अकादमी को दक्षिण एशिया की सर्वोत्तम अकादमियों में स्थान दिलाते हैं।'' ऐसा कहना है श्री श्रीरामुलु का जो टैनिस विलेज़ के व्यवस्थापक हैं, और वे बताते हैं कि किस तरह कुछ वर्षों में अकादमी आश्चर्यजनक रूप से विकसित हुई। टैनिस गाँव का निर्माण ३.५ एकड़ के फैले हुए क्षेत्र पर हुआ है। इसमें एक व्यायामशाला जहाँ प्रशिक्षक भी हैं, एक पुस्तकालय जहाँ व्यापक टैनिस साहित्य है, एरोबिक्स और योगासन प्रशिक्षण सुविधाएँ, स्वास्थ्य केन्द्र, तैराकी तालाब (स्वीमिंग पूल),

खेलों के बारे में और मज़ेदार तथ्यों के लिए आएँ hindi.chandamama.com

जौगिंग ट्रैक तथा अन्य कई सुविधाएँ हैं। दो शयन शालाएँ (डॉरमीटरीज़) हैं जिनमें २४ आवासीय छात्रों के लिए पर्याप्त स्थान है।

यहाँ पर प्राथमिक, माध्यमिक तथा विकसित उच्चतर प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण मापदण्ड इस प्रकार से बनाए गए हैं जो विभिन्न उम्र तथा विविध स्तरीय शिक्षार्थियों के अनुकूल हो। अकादमी में १२ प्रशिक्षक नियमित रूप से कार्यरत हैं, जिनके पास प्रशिक्षण हेतु समस्त आवश्यक साधन हैं जो शिक्षार्थियों की सामर्थ्य के अनुकूल हों। शिक्षार्थियों के कौशल विकास में सहायता देने लिए प्रशिक्षक अपना बहुत समय उनके साथ बिताते हैं। वे उनके हौसले बुलन्द करने तथा चुटकी बजाते उनकी भूलों को सुधारने के लिए तत्पर रहते हैं।

प्रति कोर्ट एक दल में केवल दो बच्चे होते हैं अतः बच्चों पर व्यक्तिगत रूप से पूरा ध्यान रखा जाता है। प्रशिक्षार्थी के खेल का प्रदर्शन आलोचनात्मक टिप्पणी के साथ रिकार्ड किया जाता है जिसमें खेल के मैदान में उसके द्वारा की गई भूलों तथा विकास का पता लगता है। सभी प्रशिक्षार्थियों को उत्साहित किया जाता है कि प्रशिक्षण अवधि के बाद वे दूसरे सदस्यों के साथ भी खेलें ताकि उनके कौशल का विकास हो सके।

सी जी के भूपति घोषणा करते हैं, "हमें विश्वास है कि हममें सामर्थ्य है कि हम हरेक व्यक्ति को इस तरह सिखाएँ और सहायता प्रदान करें कि वह अपने सम्भावित सामर्थ्य तक पहुँच सके। हमें चाहिए कि हम सुविधाएँ जुटाएँ जो क्षेत्रीय प्रतिभाओं को आकर्षित करें, और स्पष्ट रूप से हमें यही करना है।" अकादमी ने महेश भूपति, सानिया मिरजा, रोहन भूपन्ना और अन्य कई विश्व स्तरीय खिलाड़ी प्रशिक्षित किए हैं इस संभावना के साथ कि इसे अन्तर्राष्ट्रीय रूप से व्यापक किया जाए।

"टैनिस विलेज" का वादा है कि वह अकादमी में प्रवेश लेने वाले हर एक टैनिस उत्साही को महान प्रशिक्षण अनुभव प्रदान करेगी।

संपर्क सूत्रः

नाइक-भूपति टैनिस विलेज
१८३/४, कोडिगहल्ली, कोडिगहल्ली-टिन्डलू रोड, विद्यारण्यपुरा पोस्ट, बंगलौर-५६० ०९७
दूरभाष : +91 80 2364 1747
व्यक्तिगत सम्पर्क : श्री श्रीरामुलु-प्रबंधक
मोबाइल नं: +91 98861 44333
वैबसाइट: www.tennisvillage.net

चाँद पर खेला गया अकेला खेल गोल्फ़ है। और पढ़ें hindi.chandamama.com पर

- चार वर्ष ११ महीने की उम्र में कृष्णा नदी (५ कि.मी.) पार करने के उपलक्ष्य में लिम्का बुक रिकॉर्ड में नामांकित।
- प्रतिभा पुरस्कार अवार्ड, वर्ष २००१ में। राष्ट्रीय विशेष उपलब्धि। पुरस्कार सन् २००४ में।
- अन्तर्राष्ट्रीय तीरंदाज विजेता (१३ वर्ष उम्र सीमा) (मैक्सिकन ग्रैण्ड प्रिक्स २००९)
- एक स्वर्णपदक- ओलंपिक राउण्ड में
- २ रजत पदक- ५० मी. और ३० मी. राउण्ड में।
- १ रजत पदक- सर्वोत्तमुखी एफ आई टी ए
- १ ताम्र पदक -२० मी. राउण्ड में।
- १३ वर्ष से कम की उम्र सीमा में - राष्ट्रीय तीरंदाजी विज़ेता (चैम्पियनशिप) २००८ (६ स्वर्णपदक)

ज्योति सुरेखा

तेरह वर्ष की उम्र में विजयवाड़ा की ज्योति सुरेखा एक कुशल तीरंदाज और तैराक दोनों है।

ज्योति ने तैराकी से आरम्भ किया किन्तु बाद में तीर धनुष उठा लिया। उसका कहना है कि कोई प्रशिक्षक नहीं था जो उसे ठीक प्रशिक्षण दे सके, इसलिए उसने तीरंदाजी को चुन लिया। ज्योति अपनी प्राथमिकताओं के प्रति एकदम स्पष्ट है, ''मैं एक खेल के प्रति केन्द्रित होना चाहूँगी और वह है तीरंदाजी, क्योंकि मैं अपनी पढ़ाई और खेल के मध्य संतुलन रखना चाहती हूँ।'' उसका स्कूल ''नालन्दा विद्यानिकेतन' उसे हर प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है।

वह अपनी निशानेबाजी का अभ्यास कम्पाउण्ड धनुष से चेरुकुरी वोल्गा तीरंदाजी अकादमी में करती है। ज्योति के प्रशिक्षक, लेनिन एवं जे. रामाराव हैं। २००९ मार्च में मैक्सिको में आयोजित विश्व तीरंदाजी विजेता के प्रतिभागी के रूप में उसे चुना गया। ''मैं व्यावसायिक तीरंदाज बनना चाहती हूँ,'' ज्योति बिना संदेह के घोषणा करती है।

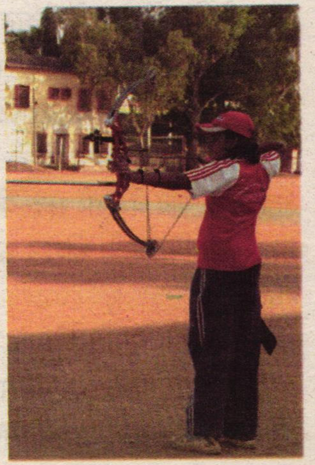

ज्योति देश भक्ति से भरपूर शब्दों में उन बच्चों को संदेश देती है जो खेलों में रुचि रखते हैं, ''हमें देश की ख्याति बढ़ाने के लिए खेलना चाहिए ना कि फायदे के लिए!''

hindi.chandamama.com पर पढ़ें नए चुटकुले

खेल-कूद का इतिहास

फैसले की बात

अम्पायर शब्द फ्रांसीसी भाषा के नोपेरे... शब्द से आया है जिसका अर्थ है 'असमान' या 'निष्पक्ष'। क्रिकेट मैचों की यह परम्परा रही है कि उसके दो अम्पायर होते हैं, एक गेंदबाज के अन्त में खड़ा होता है तथा दूसरा स्कवायरलैग पर स्थित होता है बल्ले बाज के विपरीत बॉल के सामने।

खेल के मैदान में अम्पायरों की सहायता के लिए एक और अम्पायर को शामिल करने का विचार रेफरी व्यवस्था में सर्वप्रथम श्रीलंका के पूर्व खिलाड़ी और लेखक महिन्दा विजेसिंह द्वारा दिया गया। नवम्बर १९९२ में कार्ल लाइबेनबर्ग और सिरिल मिशैल प्रथम 'थर्ड अम्पायर' बने थे जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका और भारत के बीच 'किंग्समीड' में हुए मैच में काम किया। थर्ड अम्पायर के कार्य का आरम्भ सचिन तेन्डुलकर के विरुद्ध लिए गए 'रन आउट' से हुआ था। एल.बी.डब्ल्यु. के निर्णय में थर्ड अम्पायर की सहयोगिता प्रथम बार २००२ में आई.सी.सी. चैम्पियन की ट्रॉफी श्रीलंका में और २००७ में इंग्लिश डोमैस्टिक प्रो४० मैचों में नज़र आई।

'स्निकोमीटर' जिसे प्यार से 'स्निको' कहते हैं, का विकास १९९० के मध्य 'एलन प्लास्कैट' के द्वारा हुआ था। स्निको द्वारा ध्वनि और दृश्य का चित्रांकित रूप से विश्लेषण होता है और यह दिखाता है कि वहाँ तीक्ष्ण ध्वनि थी या नहीं। यह स्पष्ट करता है कि वस्तुतः गेंद बैट से लगी थी या नहीं। इसे प्रायः दूरदर्शन द्वारा मन्द गति प्रदर्शन द्वारा दिखाया जाता है।

यह दूरदर्शी घोषणा गेंद के प्रक्षेप पथ को निर्धारित करने में सहायक होती है, और आलेखीय प्रतिरूप दिखलाती है। यह दूरदर्शी तकनीक २००१ में डा.पॉल हॉकिंग्ज के द्वारा विकसित की गई और सर्वप्रथम इसका प्रयोग चैनल ४ द्वारा मई २००१ में इंग्लैण्ड और पाकिस्तान के मध्य हुए टैस्ट मैच में किया गया, जो लॉर्ड्स क्रिकेट स्टेडियम में खेला गया।

मैच बारिश में धुल गया? आएँ hindi.chandamama.com पर

समाचार झलक

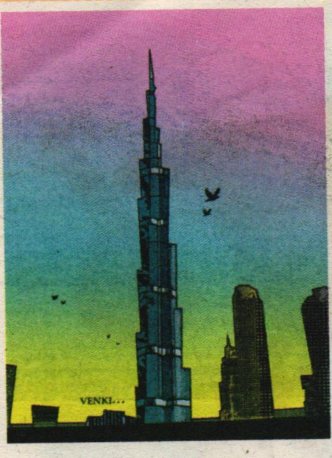

सबसे ऊँची इमारत

दुबई युनाइटेड अरब एमीरेट्स में गगनचुम्बी बुर्ज दुबई अभी निर्माणाधीन है। यह अब तक की मानव निर्मित इमारतों में सबसे ऊँची इमारत है, यद्यपि यह अभी पूर्ण रूप से तैयार भी नहीं है। इस इमारत का निर्माण २१ सितम्बर २००४ को आरंभ हुआ था और आशा है कि यह मीनार शीघ्र ही पूर्ण रूप से प्रयोग हेतु तैयार होगी। यह ''डॉन टाउन बुर्ज दुबई'' नामक इमारत फाइनेंशियल सेण्टर रोड पर शेख जैयद रोड के साथ ''फर्स्ट इण्टरचेंज'' पर विकास कार्यक्रम का हिस्सा है जो पर स्थित है। दक्षिण कोरिया के सैमसन्ग कॉरपोरेशन इस भवन के मुख्य ठेकेदार निर्माता हैं। इस परियोजना के लिए निर्धारित बजट लगभग US$4.1 बिलियन है तथा सम्पूर्ण 'डाउन टाउन दुबई''का बजट है US$20 बिलियन।

सबसे छोटा सिनेमा हॉल

रोम का सिनेमा दी पिकॉली ''सबसे छोटा सिनेमा बनाने के लक्ष्य की कार्य योजना का सिनेमा हॉल'' है। इसका असली नाम टापोलिनो सिनेमा था जो मिकी माऊस के नाम पर आधारित था। नवीनतम बाल फिल्में (नाम का अर्थ है बच्चों का सिनेमा) यहाँ दिखाई जाती हैं। इसमें केवल ६३ सीटें हैं। इसका निर्माण अल्फ्रैडो अन्नीबाली द्वारा हुआ था जिसे जनता के लिए १९४३ में खोला गया। मूलतः इस सिनेमा में परदे के रूप में चादर का तथा 'पाथ बेबी' ९.५ मि.मी. के प्रक्षेपक का प्रयोग किया जाता था। यह १९९१ में पुनर्निर्मित हुआ तथा आज यह वातानुकूलित और स्टीरियो ध्वनि से सज्जित है। इसमें दो वीरोनीज प्रोजेक्टर अथवा एक १६ मि.मी.के बॉर प्रोजेक्टर द्वारा फिल्मांकन होता है। सिनेमा दी पिकोली का नाम 'गिनीज़ बुक ऑफ रिकॉर्ड' में लिखा गया है।

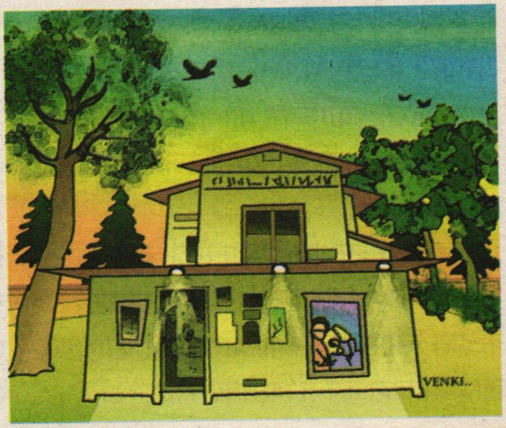

CSRTYEPGTAPNGORGARPAHPYHY - यह क्या है? hindi.chandamama.com पर आएँ

हलवा, कोई खाएगा?

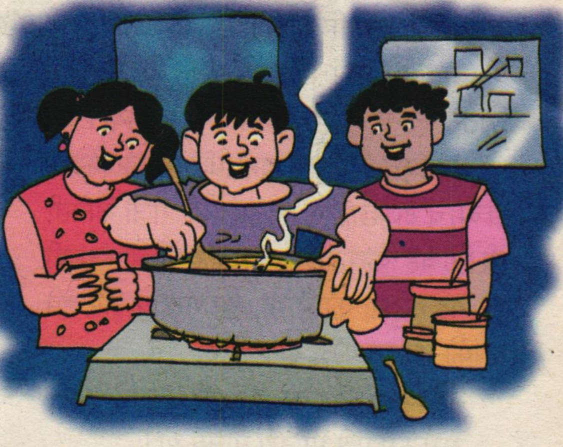

हम 'छिपना और चीख' (हाइड एण्ड श्रीक) जैसा प्रेरक खेल खेलने के बाद घिसते हुए मेरे घर में घुसे - सुनील, राजी और मैं, और यदि आपको इस खेल पर आश्चर्य हो रहा है तो बता दूँ यह खेल हमने खुद बनाया है (हाँ इसकी प्रेरणा हमें गूजबम्प्स से मिली थी)।

इसमें एक व्यक्ति दूसरों को खोजता है और जब वह किसी छुपने वाले को खोज लेता है तो उसके पीछे रेंग कर जाता है और जितनी जोर से हो सके ठहाका लगाता है...यह मजेदार है, मेरा विश्वास कीजिए। हम भूख से मर रहे थे। राजी ने फ्रिज खोला और मेरी तरफ गुस्से से देखा, ''यहाँ खाने के लिए कुछ भी नहीं है।'' मैंने ठण्डी सांस ली। मैंने देखा कुछ दलिया जैसा गैस पर पक रहा था।

क्या मैंने तुम्हें बताया कि मैं किसी कुशल रसोइए की तरह आसानी से जान सकता हूँ कि क्या बन रहा है! ''अरे! हम हलवा खाएँगे!'' मैं चीखा, मैं अभी भी खेल की ('हाइड एण्ड श्रीक') धुन में था।

दोस्तों को खुश-करने के लिए हलवे से अच्छा कुछ नहीं हो सकता था, लेकिन मेरी गंध कुशल नासिका ने तुरंत जान लिया कि बनी हुई चीज में कोई सुगंध नहीं है। जो भी हो, यह अंदाज लगाना आसान है कि यह कौन पका रहा था। अरे, मेरी बहन, शुभा, और कौन? वह आजकल खाना पकाना सीख रही है। मेरी माँ कभी भी ऐसा अधूरा हलवा नहीं छोड़तीं। मेरी बहन में मेरी माँ और मेरी तरह पाक-कौशल (खाना बनाने की कला) नहीं है।

मैंने कुछ डब्बे खिसकाए और मसालों का डब्बा ढूँढा। यह इलाइची है ना! मैंने कुछ टुकड़े पीसे और हलवे में मिलाया, वाहऽऽ....बिना रंग का हलवा भी कैसा? मैंने एक चुटकी केसर डाला, अब ठीक है। मैंने मिश्रण को धीरे से मिलाया, उसमें कुछ गाँठें थीं। जब माँ यह बनाती है तो इसमें ऐसी गाँठे कभी नहीं होतीं।

सुनील ने अन्दर देखा और भूख से तड़प कर सूँघा।

''अच्छी सुगंध है, कुछ काजू भी डालो,'' उसने कहा। मैंने थोड़े काजू के टुकड़े डाले।

गरुड़ जैसी और कॉमिक्स चाहिए? एसएमएस COMIC <आपकी प्रतिक्रिया> 54646 पर

राजी ने खड़े होकर देखा, मैं जब हिला रहा था।

''यह हलवा हमारे लिए काफी नहीं है, बबलू, क्या तुम्हें पता है? हम उसमें और ज़्यादा दूध और थोड़ा पानी मिलाएँगे।''

वाह, मेरे मित्र भी इसमें उतने ही अच्छे हैं जितना कि मैं, मैं सचमुच गर्व से भर गया।

हमने दूध और थोड़ा पानी मिलाया और मिश्रण सचमुच अच्छा लग रहा था। हाँ, राजी जानती थी कि वह किस बारे में बात कर रही है। जो भी हो, वह हलुआ काफी था, हम भूखे थे और हमें इसकी आवश्यकता थी।

यह किस चीज का हलवा है? उसने पूछा।

असल में मुझे भी नहीं मालूम था।

''शुभा नई-नई चीजें आजमाती रहती है, मैं शर्त लगा सकता हूँ कि उसने यह विधि नेट से ली होगी।''

''बुलाओ उसे, देखें, क्यों वह इसे इस रूप में छोड़ गई थी!'' राजी बोली।

''हाँऽऽ...'' मैंने कहा, ओ शुभ...!'' मैंने रसोई से बाहर निकलते हुए पुकारा, अचानक सुनील ने मुझे पीछे खींचा।

''ए! तुम सचमुच बुद्धू हो! इसे हम लोगों ने सुधार कर इतना अच्छा बनाया है, नहीं क्या?''

''तो?''

''बस... हम इसे खास बनाएँगे और जब आण्टी आएँगी तो...'' सुनील ने अपनी भवें उठाईं।

मुझे उसकी योजना पसन्द आई। ठीक है, जरूर! हम माँ से कहेंगे कि हमने हलवा बनाया है और शाबाशी लेंगे। माँ कभी भी हमारे खेलों को नहीं मानती थीं, जो हम हमेशा खुद बनाते रहते थे। आज सुबह भी वो आश्चर्य से मुझे देख रही थीं जब मैं राजी के पीछे जा कर चिल्ला रहा था। वे मुझसे हमेशा पूछती हैं, ''क्या तुम खेलने के अतिरिक्त और कुछ नहीं सोच सकते हो। काश! अपनी सारी शक्ति (जो तुम्हें मिली है) का प्रयोग यदि तुम सही ढंग से करते और इस घर में किसी की सहायता करते।'' मेरी माँ योग की कक्षा में जाती हैं और अपनी शक्ति (ऊर्जा) का सही प्रयोग करने में वे विशेषज्ञ हैं।

अब यह एक अच्छा अवसर है, उन्हें दिखाने का कि मैं और मेरे मित्र क्या करने योग्य हैं। मैं सीढ़ियों पर चढ़ा अपनी बहन के कमरे की ओर, वह अपनी अलमारी में कुछ खोज रही थी, 'तो मैडम पूरी तरह भूल चुकी हैं कि किचन में कुछ उबल कर पक रहा है !' मैं दौड़ कर सीढ़ियों के

hindi.chandamama.com पर पढ़ें तेनालीराम की कहानियाँ

नीचे लौटा। हमने अपना दिल और आत्मा निकाल कर इस हलवे में डाल दिया था। सुनील ने कहा, हम इससे कुछ बढ़िया बनाते हैं, यह हमारा अपना एक विशेष व्यंजन होगा। हमने उसमें दो चम्मच मिल्क मेड डाला, ''इसके बारे में क्या विचार है?'' राजी ने खजूर और केले का गाढ़ा द्रव्य निकालते हुए कहा, ''क्यों नहीं? बहुत अच्छा!'' हमने थोड़ी-थोड़ी मात्रा में सारी सामग्री डाली और मैंने उसे हिला कर मिलाया। सुनील ने वैनिला सुगंध की छोटी शीशी निकाली और कुछ बूँदें हमारे विशिष्ट व्यंजन में डाली गईं। अब वह गाढ़ा हो गया तथा किनारे से लहरदार हो रहा था।

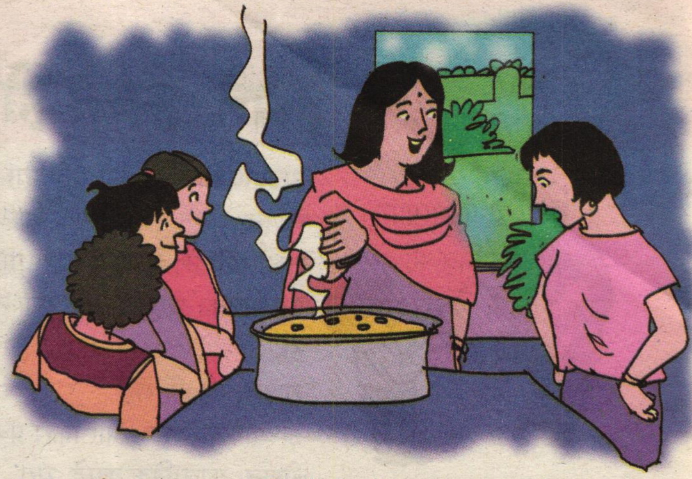

''आहा! अब यह हलवा बन गया!'' सुनील चीखा। और इससे अच्छा संयोग नहीं हो सकता था! ठीक उसी समय माँ बाजार से आ गईं। उन्होंने अपना बैग टेबल पर रखा और वे कुर्सी खींच कर बैठ गईं। हाथ से अपनी भँवें पोंछीं। वे बेहद थकी हुई लग रही थीं।

लम्बी मुस्कान के साथ हम उनके सामने खड़े थे। ''अब तुम कौन सी शरारत करने वाले हो?'' उन्होंने मुझसे पूछा। (ऐसा नहीं है कि मैं हमेशा शरारत करता हूँ या कुछ...)

''आप देखिए, हमने हलवा बनाया है, खेल के सिवाय भी, कुछ और चीजें हैं जिन्हें हम अच्छी प्रकार कर सकते हैं !'' मैंने गर्व से मुस्कराते हुए उनसे कहा।

जब हमने माँ को जो बनाया था वह दिखाया तो वे आँखें फाड़ कर देखने लगीं।

उसी समय शुभा जो अब तक जिद में अपने कमरे में थी, अपनी सहेली के साथ सीढ़ी से उतरी, ठीक अपनी तरह सारा काम बिगाड़ने, जब कि हम ठीक उसी समय माँ से पुरस्कार पाने ही वाले थे। ''देखो, बबलू और उसके दोस्तों ने अपने आप हलवा बनाया है...।'' माँ ने गर्व के सुर में कहा। शुभा ने हमारी तरफ आश्चर्य से देखा, फिर वह किचन में गई। पूरे हॉल में चीख गूँज उठी।

''मेरा स्टार्च क्या हुआ जो मैंने अपनी साड़ी के लिए उबाला था,'' शुभा चिल्लाई !

क्या मैंने आपसे बताया था कि मैं जरूरत पड़ने पर किसी जगह से नौ दो ग्यारह होने में निपुण हूँ। हम सब अपना स्टार्च का हलवा पीछे छोड़ घर से भाग खड़े हुए। एक बार मेरी माँ को समझ में आए कि हमने क्या सामग्री उसमें डाली थी तो निसंदेह वो हमारे साथ ''हाइड एण्ड श्रीक'' खेलना चाहेंगी। आप समझ रहे हैं ना कि मैं क्या कहना चाह रहा हूँ।

- रमा रमेश

जासूस समीर की कहानियाँ पढ़ें कॉमिक की तरह hindi.chandamama.com पर

हँसते-हँसते हो जा लोटपोट

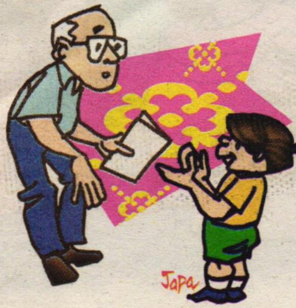

अध्यापकः धरती की धुरी क्या है?
रोशनः धरती की धुरी एक काल्पनिक रेखा है जो एक पोल-से-दूसरे तक जाती है। धरती इस पर घूमती है।
अध्यापकः शाबाश! अब क्या तुम इस रेखा पर कपड़े लटका सकते हो?
रोशनः जी हाँ, सर!
अध्यापकः जरूर, और किस प्रकार के कपड़े?
रोशनः काल्पनिक कपड़े, सर!

एक लड़का मंदिर में ज़ोर ज़ोर से कह रहा था, ''हे भगवान! कृपा कर मॉस्को को चीन की राजधानी बना देना!'' पुजारी ने पूछा, ''मेरे बच्चे, तुम ऐसी प्रार्थना क्यों कर रहे हो?''
लड़के ने कहा, ''क्योंकि मैंने अपनी परीक्षा की कॉपी में यही लिखा है!''

दादी माँः सुनील, फिर तुम्हें विज्ञान में कम अंक मिले, तुम्हें शर्म आनी चाहिए, जब मैं तुम्हारी उम्र में थी, मुझे हमेशा विज्ञान में अच्छे अंक मिलते थे।
सुनीलः दादी माँ, आपके लिए यह आसान था, क्योंकि आपके समय में बहुत कम वैज्ञानिक और अनुसंधान होते थे, लेकिन आज ऐसा नहीं है!

दत्तू

कोई चुटकुला भेजें। एसएमएस CJOKE <आपका चुटकुला> 54646 पर

चार
निर्भीक
अन्तर्धाराएँ - ३
चित्र : गाँधी अय्या
सुधीर अंकल ने आश्चर्य से सब कुछ सुना।
ठीक है! तुम लोगों ने काफी काम कर लिया है...
याद है! डा.चन्द्रा ने कहा था कि उनकी प्रयोगशाला में पानी की जाँच की जा सकती है।
मेरे विचार से कालू ही दोषी है, चलो चलें, अंकल..
सुधीर अंकल ने उसे प्यार से धकेला.
रुको, हम किसी पर बिना उचित प्रमाण के दोष नहीं लगा सकते!
अरेऽऽ! हमने यह पहले क्यों नहीं सोचा?
जैस्मिन खोई सी ग्लास को घूरती रही। अचानक वह उत्साहित सी दिखी।
मैं डा.चन्द्रा को जानता हूँ। ...मैंने उनसे बात कर ली है। वे हमारी सहायता कर सकते हैं।
प्रयोगशाला की जाँच से हमें बहुत कुछ पता चलेगा। दीप अपने घर के पानी के डब्बे से एक जग में पानी ले आओ।

वे उनकी प्रयोगशाला पहुँचे। अन्दर जाने पर उन्हें पता चला कि उस दिन डा. चन्द्रा देर से आएँगे।
अब क्या करें?
आप प्रतीक्षा कर सकते हैं, वे जल्दी ही आएँगे।
सुधीर अंकल ने अपने आने का उद्देश्य समझाया।
प्रयोगशाला में एक आदमी उनकी तरफ आया।
मैं अशोक हूँ, शोध सहायक, क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ?
ओह! क्या डा.चन्द्रा ने कहा था कि वे हमारी प्रयोगशाला में जाँच करेंगे?
जी, सर!
अशोक ने विचार में डूबे अपनी ठुड्डी खुजलाई।
यह महत्वपूर्ण लगता है, यदि मैं उनके आने से पहले जाँच शुरू कर दूँ तो समय बचेगा।
वे पाँचों प्रतीक्षा करते रहे, जब अशोक ने जाँच की।

परिणाम देख कर अशोक परेशान था।
यह क्या? क्लोरिन मिश्रण!
अशोक उनके पास आया।
मैने जाँच कर ली। इस पानी में मिले अवयव वही हैं जो डा. चन्द्रा द्वारा सूत्रबद्ध किए गए जल-शोधक घोल में पाए गए थे।
यह मामला और भी उलझ रहा है।
तभी डा. चन्द्रा अन्दर आए और अनमने से अपनी कुर्सी पर जा बैठे।
जब डा. चन्द्रा ने अशोक के हाथ में जाँच का परिणाम देखा, वे घबराकर हाँफने लगे।
डा. चन्द्रा.. हमने अभी पानी के डब्बे से लिए पानी के नमूने की जाँच की है, परिणाम...
वह अपनी कुर्सी से उछले मगर सुधीर ने उन्हें कस कर पकड़ा।
आप घबरा रहे है डा. चन्द्रा, मामला क्या है?
प्रयोगशाला के बाहर जोजो गुर्रा रहा था।

मैंने एफ डी ए के अनुमोदन की प्रतीक्षा में अधीरता दिखाई, यह सब उसी का परिणाम है।
मैं अपने नए शोधक-सूत्र की जाँच क्लोरीन मिश्रण के साथ मनुष्यों पर करना चाहता था।
मैंने राजा को पैसे दे कर कहा कि वह अपनी दुकान के सारे पानी के डब्बों में एक शीशी से सूई द्वारा थोड़ी मात्रा मिला दे।
अब समझ में आया कि पानी के डब्बों पर हस्तक्षेप के कोई निशान क्यों नहीं थे।
क्या कालू इस बारे में जानता है?
नहीं, वह नहीं जानता...
मुझे यह उम्मीद न थी कि घोल का इतना दुष्प्रभाव होगा।
तो कालू बस अपने मित्र से मिलने गया था।
मुझे विश्वास नहीं होता ! लोगों के स्वास्थ्य के साथ खेलना... छिः छिः!
काश! मैंने ऐसा न किया होता...
सुधीर ने असिस्टैण्ट कमिश्नर को फोन किया। उसने उन्हें राजा के बारे में भी सूचित किया।
भेद खुल गया और सब अच्छी प्रकार निपट गया। शाबाश बच्चों। एक दावत होनी चाहिए, आओ चलें, जोजो तुम भी!
समाप्त

Share your thoughts, favorite stories and jokes through free sms
Log on to
www.chandamama.com
FREE SMS
Connect with all your buddies and relatives instantly anywhere in India.
Try it!
You'll love it!

CHANDAMAMA (Hindi) August 2009 Registrar of Newspapers of India No. 1087/57. Regd No. TN/CH(C)/217/09-11
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11